https://www.facebook.com/Kamal.Sandesh/ www.kamalsandesh.org @kamalsandeshbjp

कमल संदेश

'देश आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है'

वर्ष-13, अंक-17 01-15 सितंबर, 2018 (पाक्षिक) ₹20

शत शत नमन !

अटल बिहारी वाजपेयी

1924 - 2018

राष्ट्रभक्ति की ज्वाला में जब एक महामानव तपता है... तब कहीं जाकर देश को 'अटल' मिलता है। —अमित शाह

स्व. अटल बिहारी वाजपेयी को नई दिल्ली स्थित उनके निवास पर श्रद्धांजलि देते राष्ट्रपति, उप-राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष, विभिन्न दलों के नेतागण तथा विदेशी गणमान्य व्यक्ति

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

उप-राष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी

यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी

भूटान के राजा श्री जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक

अफगानिस्तान के पूर्व-राष्ट्रपति श्री हामिद करजई

कमल संदेश

पाक्षिक पत्रिका

संपादक
प्रभात झा

कार्यकारी संपादक
डॉ. शिव शक्ति बक्सी

सहायक संपादक
संजीव कुमार सिन्हा

संपादक मंडल सदस्य
सत्यपाल
राम नयन सिंह

कला संपादक
विकास सैनी
मुकेश कुमार

संपर्क
फोन: +91(11) 23381428

फैक्स
फैक्स: +91(11) 23387887

ई-मेल
mail.kamalsandesh@gmail.com
mail@kamalsandesh.com

वेबसाइट: www.kamalsandesh.org

विषय-सूची

06 **एक युग का अंत**
भारत रत्न और तीन बार प्रधानमंत्री रहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी का 16 अगस्त को शाम 5.05 बजे निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे। वे दो महीने से एम्स में भर्ती थे। अटलजी को देखने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, उपराष्ट्रपति...

अटल बिहारी वाजपेयीजी पर विशेष

अटलजी को श्रद्धांजलि! 09

संपादकीय टिप्पणियां 13

कभी झुके नहीं, क्योंकि वो अटल थे : नरेन्द्र मोदी 21

लेख

भविष्य की राह दिखाने वाला अटल युग 27

शत नमन तुझे है बार-बार 29

साक्षात्कार

शिव कुमार शर्मा 17

अन्य

प्रधानमंत्री द्वारा लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को संबोधन 31

श्रद्धांजलि

बलराम दास टंडन 33

स्थायी स्तंभ

सोशल मीडिया से 04

व्यंग्य चित्र 04

15 **अटलजी: भारतीय राजनीति के 'अजातशत्रु'**
अटलजी आखिर चले गए और यह लड़ाई हार गए। वे अदृश्य क्षितिज की ओर अपनी यात्रा पर चल दिए। यह एक ऐसी लड़ाई है जिसे अब...

22 **मेरे अटल जी**
अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे...

24 **असंभव की किताबों पर जय का चक्रवर्ती निनाद करने वाले मानवता के स्वयंसेवक**
अटल बिहारी वाजपेयी इस देश की राष्ट्रीयता...

26 **अटल बिहारी वाजपेयी भारत माता के सपूत**
पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारत माता के एक ऐसे सपूत थे, जिन्होंने स्वतंत्रता...

प्रकाशक एवं मुद्रक: डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा मुद्रित, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास के लिए डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा प्रकाशित, एच.टी. मीडिया लिमिटेड, बी-2, सेक्टर-63, नोएडा (उ.प्र.)-201307 से मुद्रित एवं डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी.-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित। सम्पादक- प्रभात झा

twitter

@narendramodi

केंद्र सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, विभिन्न सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, बागवानी के एकीकृत विकास के लिए मिशन केरल में प्राथमिकता के आधार पर प्रभावित लोगों तक पहुंचे।

@AmitShah

उत्तर प्रदेश में भाजपा बूथ स्तर तक इतनी मजबूत है कि यहां अवसरवादी महागठबंधन भी भाजपा की विजय को नहीं रोक सकता। हमारी केंद्र और प्रदेश सरकार ने अनेक जनकल्याणकारी कार्य किये हैं, जिससे 2014 से बड़ी विजय निश्चित है।

@Ramlal

कांग्रेस का हमेशा ही संघ जैसे राष्ट्रवादी व सेवाभावी संगठन के प्रति द्वेष रहा है। नासमझों को समय ही समझाता है। जो देश को तोड़नेवालों के साथ खड़े होते हैं, वे क्या समझेंगे देश जोड़नेवालों को! घृणा व द्वेष की राजनीति कांग्रेस की पुरानी परम्परा है।

facebook

'स्किल ऑन व्हील्स' कौशल विकास हेतु भारत सरकार की अद्भुत पहल है। कौशल रथों द्वारा सरकार प्रदेश के आखिरी गांव तक पहुंचकर युवाओं को कौशल विकास कार्यक्रम से जोड़ेगी। युवाओं को उनकी पसंद के व्यवसाय में 50 से 1800 घंटों का प्रशिक्षण दिया जाएगा और उनके लिए रोजगार के अवसर बनाए जाएंगे। — **डॉ. रमन सिंह**

यह हमारी सरकार के आर्थिक सुधारों का नतीजा है कि उत्तराखंड राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में वर्ष 2017-18 में 2016-17 के मुकाबले 6.70 फीसदी का इजाफा हुआ है। अर्थ एवं संख्या निदेशालय की रिपोर्ट के मुताबिक अब उत्तराखंड की GSDP 172859 करोड़ रुपये हो गई है। — **त्रिवेंद्र सिंह रावत**

वर्ष 2004 तक राजद के कुशासन की वजह से राजधानी पटना और जिला मुख्यालय शहर तक बिजली के लिए तरसते थे। शाम होते ही बाजार अंधेरे में डूब जाते थे, जबकि आज गांवों तक को औसतन 18 घंटे बिजली मिल रही है। लालटेन पार्टी के लोग बिहार की रोशनी नहीं देखना चाहते हैं। — **सुशील कुमार मोदी**

व्यंग्य चित्र

सभार : सोशल मीडिया

आंधियों में जलाए हैं बुझते दिए

हर चुनौती से दो हाथ मैंने किए,
आंधियों में जलाए हैं बुझते दिए।

-अटल बिहारी वाजपेयी

अटल जी चिरनिद्रा में लीन हो गये, लेकिन जिस दीया के प्रकाश को अक्षुण्ण रखने के लिये उन्होंने अपने जीवन का कण-कण और क्षण-क्षण समर्पित कर दिया, आज वह प्रखरता से प्रकाशमान है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के समाचार से पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई। जैसे ही उनके स्वास्थ्य बिगड़ने का समाचार प्राप्त हुआ था, देश के कोने-कोने में प्रार्थना सभाएं तो चल ही रही थीं, उनके देहावसान से शोक में डूबे लोग उन्हें जगह-जगह श्रद्धांजलियां देने लगे। नई दिल्ली स्थित उनके घर एवं भाजपा मुख्यालय में लोग उनके अंतिम दर्शन को उमड़ पड़े। जब भाजपा मुख्यालय से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह के नेतृत्व में हजारों लोग पैदल ही अटल जी की अंतिम यात्रा में शामिल हुए, 'अटल बिहारी अमर रहे' के नारे से सारा दृश्य गुंजायमान हो गया। 'स्मृति स्थल' में जब उनकी दत्तक पुत्री ने पवित्र अग्नि से उनके पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार किया, तब गगनभेदी नारों से लोग अटल जी को अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित कर रहे थे। अटल जी लोगों के हृदय पर राज करते थे तथा पक्ष हो या विपक्ष सबके दिलों में उन्होंने जगह बनाई थी। भारतीय राजनीति में जो असंभव लगता था, उसे संभव करने वालों में उनका नाम अग्रणी पंक्ति में लिखा जायेगा।

अटल जी ने भारतीय राजनीति में एक अनुपम विरासत छोड़ी है। वे दरअसल वास्तविक भारत और इसके लोकतांत्रिक परंपरा जिससे राष्ट्र की सांस्कृतिक-सामाजिक आधार की रचना हुई है, उसके सच्चे साधक थे। जहां एक ओर वे राजनीतिक दल एवं उसके बाहर तथा शासन व सरकार की लोकतांत्रिक कार्यपद्धति पर विश्वास रखते थे, वहीं दूसरी ओर जब देश पर आपातकाल थोपा गया तब इसका मुखर विरोध करने वालों में वे अग्रणी रहे। लोकतंत्र उनकी राष्ट्रभक्ति की आत्मा रही, क्योंकि प्राचीन काल से भारतीय परंपराओं की विविधता का सामंजस्य लोकतांत्रिक भावना से ही बिठाया गया। राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विषयों पर भी वे लोकतांत्रिक समाधान के ही सदैव पक्षधर रहे। अपने लंबे संसदीय जीवन में विपक्ष में रहते हुए भी उन्होंने देश के संसदीय इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यह उनका भारतीय समस्याओं पर गहरा दृष्टिकोण ही था जिस कारण वे भारतीय मूल्यों एवं विचारों के आधार पर उनका समाधान ढूंढने में हमेशा सफल रहे। जमीनी सच्चाइयों से जुड़े होने के कारण उनके दृष्टिकोण का सम्मान उनके राजनैतिक विरोधी भी करते थे। पूरे देश का उन पर इतना विश्वास था कि संकट के समय दूसरे राजनैतिक दलों के भी लोग उनसे परामर्श लेते थे। मां भारती के एक सच्चे सपूत की तरह अपने पूरे राजनैतिक जीवन में उन्होंने कई बार दलगत राजनीति से उपर उठकर निर्णय लिए एवं दल के हित से उपर राष्ट्रहित को रखा। जब देश पर आपातकाल थोपा गया, राष्ट्रहित में जनसंघ का विलय जनता पार्टी में कर दिया गया। सिद्धांतनिष्ठ एवं विचारधारा पर वे हमेशा अडिग रहे और इन पर किसी भी प्रकार के समझौता से इनकार करते हुए जनता पार्टी से निकल कर अपने सहयोगियों के साथ भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। सिद्धांतनिष्ठ एवं मूल्य आधारित राजनीति पर उनका अटूट विश्वास था।

अटल जी के नेतृत्व में देश ने हर क्षेत्र में अपना झण्डा बुलन्द किया। भारत एक शांतिप्रिय परमाणु शक्ति के रूप में उभरा तथा अंतरराष्ट्रीय दबावों में भी नहीं झुका। 'अटल' नाम के अनुरूप वे दबावों में नहीं झुके और वैश्विक स्तर पर चुनौतियों को भारत के आंतरिक शक्ति प्रगट करने का अवसर बना दिया। उन्होंने सुशासन एवं विकास की ऐसी गंगोत्री बहा दी, जिससे देश में आधारभूत संरचनाओं में अभूतपूर्व विकास हुआ और अनेक क्षेत्रों में भारत स्वावलंबी बना।

भारतीय राजनीति के वे ऐसे शिखर पुरुष थे जिनके जादुई शब्द जन-जन को प्रेरणा से भर देते थे। लोग उन्हें देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते थे और यह स्वप्न उनके प्रति निरंतर बढ़ते जन समर्थन से संभव भी हुआ। अटल जी के नेतृत्व में देश ने हर क्षेत्र में अपना झण्डा बुलन्द किया। भारत एक शांतिप्रिय परमाणु शक्ति के रूप में उभरा तथा अंतरराष्ट्रीय दबावों में भी नहीं झुका। 'अटल' नाम के अनुरूप वे दबावों में नहीं झुके और वैश्विक स्तर पर चुनौतियों को भारत के आंतरिक शक्ति प्रगट करने का अवसर बना दिया। उन्होंने सुशासन एवं विकास की ऐसी गंगोत्री बहा दी, जिससे देश में आधारभूत संरचनाओं में अभूतपूर्व विकास हुआ और अनेक क्षेत्रों में भारत स्वावलंबी बना। उन्होंने अपने एक भाषण में ठीक ही कहा था कि काल के कपाल पर उन्होंने अमिट रेखाएं खींच दी हैं। उनके द्वारा दिखाया गया प्रकाश आज के उभरते 'न्यू इंडिया' का पथ-प्रदर्शक बन गया है।

अटल जी ने पीढ़ी दर पीढ़ी जन-जन को देशभक्ति एवं देशप्रेम से ओतप्रोत हो राष्ट्रजीवन में योगदान के लिये प्रेरित किया। एक राजनैतिक आंदोलन जो देश की राजनीति में एक विकल्प देने के लिये आया, अटलजी, पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री, जिन्होंने अपना कार्यकाल भी पूरा किया, ने एक नया इतिहास रच दिया। यह एक ऐसा इतिहास था जिसमें उनकी अग्रणी भूमिका थी और जिसकी विरासत को आज करोड़ों लोग नमन कर रहे हैं। एक दूरद्रष्टा, लोकतंत्र में आस्था रखने वाले, आम सहमति की राजनीति में विश्वास करने वाले अटल जी राजनीति में सज्जनता एवं संवेदनशीलता के वाहक थे। हम उन्हें शत-शत नमन कर अपनी विनम्र श्रद्धांजलि देते हैं। ■

shivshakti@kamalsandesh.org

एक युग का अंत

नहीं रहे भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी

भारत रत्न और तीन बार प्रधानमंत्री रहे श्री अटल बिहारी वाजपेयी का 16 अगस्त को शाम 5.05 बजे निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे। वे दो महीने से एम्स में भर्ती थे।

अटलजी को देखने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडु, लोकसभाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी, कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी, केंद्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्रीमती स्मृति ईरानी, श्री सुरेश प्रभु, श्री जेपी नड्डा, श्री रामविलास पासवान, डॉ. हर्षवर्धन, श्री जितेंद्र सिंह, श्री अश्वनी कुमार चौबे, जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला, श्रीमती वसुंधरा राजे, श्री शिवराज सिंह चौहान, दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल, उपमुख्यमंत्री श्री मनीष सिसोदिया, बसपा प्रमुख सुश्री मायावती सहित अनेक वरिष्ठ नेतागण एम्स पहुंचे। यहां से उनका पार्थिव शरीर उनके निवास कृष्ण मेनन मार्ग पर लाया गया। यहां पर पूर्व प्रधानमंत्री का शव उनके निवास स्थान पर तिरंगे में लपेटा गया। यहां पर लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

विदित हो कि श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर स्थित शिंदे की छावनी में हुआ था। अटलजी के पिता का नाम श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी और मां का नाम श्रीमती कृष्णा वाजपेयी था। अटलजी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वे 1968 से 1973 तक भारतीय जनसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे। श्री वाजपेयी 10 बार लोक सभा के सांसद रहे। वहीं वे दो बार 1962 और 1986 में राज्यसभा के सांसद भी रहे। सन् 1957 से 1977 तक वे लगातार बीस वर्षों तक जन संघ के संसदीय दल के नेता रहे। उन्होंने आपातकाल के खिलाफ संघर्ष किया। आपातकाल के बाद देश की जनता द्वारा चुनी गयी मोरारजी देसाई जी की सरकार में वे विदेश मंत्री बने। सिद्धांतों पर अडिग रहते हुए विचारधारा की राजनीति करने वाले श्री वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी की स्थापना के बाद पहले अध्यक्ष बने। उन्होंने तीन बार 1996, 1998-99 और 1999-2004 में प्रधानमंत्री के रूप में देश का प्रतिनिधित्व किया।

आवास पर श्रद्धांजलि देने वालों का तांता

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अंतिम दर्शन के लिए 17 अगस्त की सुबह से ही कृष्ण मेनन मार्ग स्थित उनके आवास पर लोगों

की लंबी कतारें लग गई थीं। अटलजी के प्रशंसक उनके अंतिम दर्शन करने के लिए अलग-अलग राज्यों से आए हुए थे। कोई सीधे रेलवे स्टेशन से पहुंचा तो कोई सीधे एयरपोर्ट से उनके आवास पर पहुंचा। आवास पर प्रशंसकों की तादाद इतनी अधिक हो गई कि बहुत से लोगों को बिना अंतिम दर्शन के ही वापस जाना पड़ा।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडु, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, श्री लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, पूर्व राष्ट्रपति श्री

प्रणब मुखर्जी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, केंद्रीय मंत्री श्री राजनाथ सिंह, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री सुरेश प्रभु, श्री रविशंकर प्रसाद, श्री धर्मेंद्र प्रधान, श्री किरन रीजिजू, श्री कलराज मिश्रा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री कृष्ण गोपाल, गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रूपानी, हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री श्रीमती ममता बनर्जी, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री बिप्लव कुमार देव, असम के राज्यपाल श्री जगदीश मुखी, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव, कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी, कांग्रेस नेता श्री दिग्विजय सिंह, कर्नाटक के मुख्यमंत्री श्री एचडी कुमारस्वामी, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडु, दिल्ली के उपराज्यपाल श्री अनिल बैजल, फिल्म अभिनेत्री श्रीमती शबाना आजमी, शायर श्री जावेद अख्तर, हास्य कवि श्री सुरेंद्र शर्मा सहित अनेक विशिष्टजनों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

अंतिम यात्रा में देश भर से उमड़े लोग

17 अगस्त को अटलजी के तिरंगे में लिपटे पार्थिव शरीर को वाहनों के काफिले के साथ उनके आवास से अकबर रोड, इंडिया गेट होते हुए दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित पार्टी मुख्यालय लाया गया। यहां सभी दलों के नेता, बॉलीवुड अभिनेता से लेकर आम लोगों ने अपने प्रिय नेता अटलजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। यहां जाति, धर्म, संप्रदाय, बोली या पार्टी को छोड़कर सब लोग भाइचारे की मिसाल कायम करते हुए अपने प्रिय नेता को विदाई दी।

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, वरिष्ठ भाजपा नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, केंद्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज, रक्षा मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण, कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी, यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी, शिवसेना प्रमुख श्री उद्धव ठाकरे, आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चंद्रबाबू नायडु, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री श्रीमती ममता बनर्जी, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल, ओडिशा के मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक, जम्मू–कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री सुश्री महबूबा मुफ्ती, कांग्रेस नेता श्री गुलाम नबी आजाद, श्री मल्लिकार्जुन खड़गे एवं श्री आनंद शर्मा, लोकसभा डिप्टी स्पीकर श्री एम. थंबीदुरई, पूर्व केंद्रीय मंत्री श्री ए. राजा, एमडीएमके प्रमुख वाइको, तृणमूल कांग्रेस नेता श्री दिनेश त्रिवेदी, सेना प्रमुख श्री बिपिन रावत, नौसेना प्रमुख श्री सुनील लंबा, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार श्री अजीत डोवाल सहित अनेक विशिष्टजनों ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ ही विदेशी गणमान्य व्यक्तियों में भूटान के राजा श्री जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक, अफगानिस्तन के राष्ट्रपति श्री हामिद करजई, नेपाल के विदेश मंत्री श्री प्रदीप कुमार ज्ञवाली, श्रीलंका के कार्यकारी विदेश मंत्री श्री लक्ष्मण किरिएला एवं बंगलादेश के विदेश मंत्री श्री अबुल हसन मोहम्मद अली ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। दीनदयाल उपाध्याय मार्ग 'अटलजी अमर रहे' 'भारत की माता की जय' आदि के नारों से गुंजित होता रहा।

मुख्यालय के बाहर स्क्रीन

भारी भीड़ के चलते कई वरिष्ठ नेताओं से लेकर आम लोग अटलजी

के अंतिम दर्शन नहीं कर सके। भीड़ को ध्यान में रखते हुए मुख्यालय के बाहर स्क्रीन लगाई गई थी, जहां लाइव चल रहा था। देश के कोने-कोने से पहुंचे लोग इसी स्क्रीन के आगे फूलों के गुलदस्ते रखकर अटलजी को श्रद्धांजलि देते दिखे। दोपहर 2 बजे पार्टी मुख्यालय से फूलों से सजा सैन्य ट्रक धीरे-धीरे आगे बढ़ता चला आ रहा था। पीछे-पीछे लोगों का हुजूम था। अंतिम यात्रा में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह सहित तमाम मुख्यमंत्री और मंत्री 6 किलोमीटर तक पैदल ही स्मृति स्थल तक गए। इनके पीछे करीब एक किलोमीटर लंबा काफिला भी था, लेकिन वाहनों की कतार से ज्यादा लोगों का सैलाब दिखाई दे रहा था।

गुलाब की पंखुड़ियों से सजाया मार्ग

अंतिम यात्रा मार्ग को गुलाब की पंखुड़ियों से सजा दिया गया था। पुष्पवर्षा के जरिए लोगों ने श्रद्धांजलि भी दी। सड़कों के दोनों छोर पर लगे बड़े-बड़े होर्डिंग में अटलजी की तस्वीरें नजर आ रहीं थी। साथ में लिखा था, मैं जी भर जिया, मैं मन से मरुं, लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरुं...। वहीं कुछ होर्डिंग पूर्व प्रधानमंत्री को शत-शत नमन के लिए भी थे। भीड़ में भी अटल जी की तस्वीरें दिखाई दे रही थीं। लोग हाथों में कटआउट लेकर दौड़ते जा रहे थे।

मदरसों के बच्चों ने की पुष्प वर्षा

आईटीओ से बहादुरशाह जफर मार्ग पर कोटला का तिराहा पार करते ही मस्जिद के बाहर मौजूद मदरसों के बच्चों ने गुलाब की पुष्पवर्षा की। इसके बाद अंतिम यात्रा दिल्ली गेट पहुंची और वहां से राष्ट्रीय स्मृति स्थल पहुंची। करीब छह किलोमीटर लंबे इस सफर को तय करने के बाद भी लोगों का हुजूम कम नहीं हुआ था।

स्मृति स्थल पर सेना के तीनों अंगों के प्रमुखों ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी को सलामी दी। इस दौरान राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद, उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडु, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, रा.स्व.संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह, कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी सहित अनेक विशिष्टजन उपस्थित थे।

अटलजी का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ दिल्ली के राजघाट के पास स्थित स्मृति स्थल में सम्पन्न हुआ। अटलजी द्वारा गोद ली गई बेटी नमिता ने उन्हें मुखाग्नि दी। राष्ट्र ने उन्हें नम आंखों से अंतिम विदाई दी।

हरिद्वार में गंगा में लीन हुईं अटल की अस्थियां

देश के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अस्थियां 19 अगस्त को हरिद्वार में गंगा में विसर्जित कर दी गईं। इससे पहले दिल्ली से अस्थि कलश पहुंचने पर भल्ला कॉलेज ग्राउंड से हर की पौड़ी तक दो किलोमीटर लंबी यात्रा निकाली गई थी।

इस दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत समेत कई वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। इस अस्थि कलश यात्रा में भाजपा के कार्यकर्ताओं समेत हजारों लोग शामिल थे। ■

अटलजी को श्रद्धांजलि!

भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से पूरा देश शोक में डूब गया। राजनेताओं से लेकर तमाम क्षेत्रों की प्रमुख हस्तियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

अटल जी की कद-गरिमा ने मुझे सार्वजनिक जीवन के प्रति किया आकर्षित : रामनाथ कोविंद

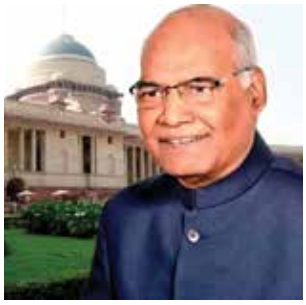

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन को अपने लिए निजी क्षति करार दिया और कहा कि यह वाजपेयी का कद और गरिमा ही थी जिसने उन्हें कानूनी पेशा त्यागकर सार्वजनिक जीवन में आने को आकर्षित किया। वाजपेयीजी के निधन पर शोक जताते हुए राष्ट्रपति ने पूर्व प्रधानमंत्री की दत्तक पुत्री नमिता कौल भट्टाचार्य को लिखे पत्र में कहा कि उनके साथ काम करना एक अविस्मरणीय अनुभव था।

अटल जी का निधन आपके और घर में अन्य सदस्यों के लिए एक निजी क्षति है। यह मेरे लिए भी एक निजी क्षति है। यह उनका कद और गरिमा थी जिसने मुझे सार्वजनिक जीवन के प्रति आकर्षित किया, क्योंकि मैंने उनका सहकर्मी बनने के लिए कानूनी पेशा त्याग दिया।"

राष्ट्रपति निर्वाचित होने के बाद जब मैंने उनसे मुलाकात की तो वह बिस्तर पर थे, लेकिन उनकी आंखों की हलचल से जवाब मिला। मैंने महसूस किया कि उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया है।" राष्ट्रपति ने कहा कि वाजपेयी के निधन से देश के लाखों घरों ने क्षति महसूस की है।

श्री रामनाथ कोविंद ने कहा, "वह हमारे अत्यंत लोकप्रिय पूर्व प्रधानमंत्री, दुर्लभ विशिष्टता वाले राष्ट्रीय नेता और आधुनिक भारत के राजनेता थे। उन्होंने अपने लंबे और असाधारण सार्वजनिक जीवन में अनगिनत तरीकों से असंख्य लोगों को प्रभावित किया-स्वतंत्रता सेनानी और बुद्धिजीवी के रूप में, लेखक और कवि के रूप में, सांसद और प्रशासक के रूप में और अंततः प्रधानमंत्री के रूप में। वह भारतीय राजनीति में नवजागरण करने वाले सच्चे व्यक्ति थे।"

राष्ट्रपति ने कहा कि जीवन से भी बड़े हृदय वाले नेता के निधन से हुई क्षति न केवल भारत में, बल्कि विश्व में भी महसूस की जाएगी। उन्होंने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री अटल जी दबाव में भी न झुकने तथा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में निर्णायक नेतृत्व का एक उदाहरण थे। 1998 के परमाणु परीक्षण, 1999 के करगिल युद्ध में विजय, उनकी सरकार में आर्थिक बदलाव, प्रगति एवं विकास-उनका कार्यकाल उपलब्धियों से भरा रहा।

श्री रामनाथ कोविंद ने पत्र में लिखा, "कृपया एक बार फिर मेरी सांत्वना स्वीकार करें और इसे अटल जी के अनगिनत मित्रों तथा प्रशंसकों तक पहुंचाएं। ईश्वर आपको और परिवार के अन्य सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति एवं साहस प्रदान करें।"

दक्षेस देशों के नेताओं ने दी विदाई

श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 15 वर्ष पहले कहा था कि ''आप दोस्त बदल सकते हैं पड़ोसी नहीं'', और पड़ोसी देशों के साथ उनकी सौहार्दता की झलक तब मिली जब पाकिस्तान सहित दक्षेस देशों के नेता उनके अंतिम संस्कार में उपस्थित हुए। भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामायाल वांगचुक, पाकिस्तान के कानून मंत्री अली जाफर, नेपाल के विदेश मंत्री प्रदीप कुमार ग्यावली, बांग्लादेश के विदेश मंत्री अबुल हसन महमूह अली और श्रीलंका के कार्यवाहक विदेश मंत्री लक्ष्मण किरीला सहित कई विदेशी हस्तियों ने नई दिल्ली में वाजपेयीजी के अंतिम संस्कार के दौरान अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति हामिद करजई ने भी वाजपेयीजी को मध्य दिल्ली के स्मृति स्थल पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। कई देशों के राजनयिक भी लोकप्रिय नेता के अंतिम संस्कार में शामिल हुए। वाजपेयी की दत्तक पुत्री नमिता कौल भट्टाचार्य ने ''अटल बिहारी अमर रहे'' के नारों के बीच उन्हें मुखाग्नि दी। पूर्व प्रधानमंत्री ने हमेशा पाकिस्तान सहित पड़ोसी देशों के साथ अच्छे रिश्ते बनाने के प्रयास किए। वाजपेयी ने 2003 में संसद के अंदर कहा था, ''आप दोस्त बदल सकते हैं लेकिन पड़ोसी नहीं।''

चीन-भारत संबंधों में वाजपेयी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई: चीन

चीन ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि दी। वाजपेयीजी को शानदार नेता बताते हुए चीन ने कहा कि उन्होंने द्विपक्षीय संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विदेश मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा, ''भारत के शानदार नेताओं में शामिल वाजपेयी ने चीन-भारत संबंधों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।''

अटल बिहारी वाजपेयी का दुनियाभर में बड़ा सम्मान था। उन्हें एक ऐसे नेता के रूप में याद किया जाएगा जिन्होंने दोनों देशों के बीच दोस्ताना और गौरवपूर्ण रणनीतिक साझेदारी में व्यक्तिगत तौर पर बड़ा योगदान दिया।

- ब्लादिमीर पुतिन, राष्ट्रपति, रूस

राष्ट्रीय क्षति के इस समय मैं भारत की जनता और सरकार के प्रति संवेदना व्यक्त करता हूं।

-अब्दुल्ला यामीन, राष्ट्रपति, मालदीव

मुझे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन की खबर सुनकर बड़ा दुःख हुआ। भगवान दिवंगत अटल बिहारी वाजपेयी की आत्मा को शांति प्रदान करें।

-के.पी.शर्मा ओली, प्रधानमंत्री, नेपाल

अटलजी के रूप में भारत ने एक महान बेटा खो दिया, लेकिन उनकी विरासत जिंदा रहेगी, इस दुःख की घड़ी में वह भारतीय जनता के साथ हैं और अटलजी की आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। अटलजी मॉरिशस के प्रथम प्रधानमंत्री शिवसागर रामगुलाम के अच्छे दोस्त थे। न सिर्फ अच्छे नेता, बल्कि अच्छे कवि भी थे। अटलजी संस्कृति से जुड़े ऐसे इंसान थे, जिनमें दूसरों के लिए बहुत करुणा थी। उन्होंने कभी उसूलों से समझौता नहीं किया और न ही कभी कटुता दिखाई।

- डॉ. नवीन रामगुलाम, पूर्व प्रधानमंत्री, मॉरिशस

वाजपेयी ने अपने साहसी नेतृत्व और आम आदमी के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति से भारत को दिशा प्रदान की। वाजपेयी के सम्मान में मॉरिशस के भवनों पर भारतीय ध्वज के साथ मॉरिशस का ध्वज भी आधा झुका रहेगा।

- प्रविंद कुमार जगन्नाथ, प्रधानमंत्री, मॉरिशस

आज हम सबने एक महान मानववादी और श्रीलंका के एक सच्चे मित्र को खो दिया। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एक दूरदर्शी नेता और लोकतंत्र के रक्षक थे। मेरी संवेदनाएं उनके परिवार एवं पूरी दुनिया में उनके लाखों प्रशंसकों के साथ हैं।

- सिरिसेना, प्रधानमंत्री, श्रीलंका

वे भारत के महान सपूतों में से एक थे और आम लोगों से जुड़े मुद्दों को रेखांकित करने तथा सुशासन में उनके योगदान को सदैव याद रखा जायेगा। भारत के महान सपूतों में से एक, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के दुःखद निधन से हम स्तब्ध हैं।

- शेख हसीना, प्रधानमंत्री, बांग्लादेश

वाजपेयी ने बहुत पहले ही पहचान कर ली थी कि भारत-अमेरिका के बीच साझेदारी दुनिया में आर्थिक समृद्धि और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। दोनों लोकतंत्र आज भी उनकी इस दूर-दृष्टि से लाभान्वित हो रहे हैं। भारत को वैश्विक आर्थिक शक्ति बनाने वाजपेयी के योगदानों की दिशा में भारतीय आगे बढ़ेंगे।

- माइक पोम्पिओ, अमेरिकी विदेशी मंत्री

उन्होंने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध में 'बदलाव' लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया और विकास के लिए क्षेत्रीय सहयोग का वह लगातार समर्थन करते रहे। भारत-पाकिस्तान के बीच शांति बहाली के लिए उनके प्रयासों को हमेशा याद रखा जाएगा। वाजपेयी एक लोकप्रिय नेता थे जिन्होंने भारत-पाक के संबंधों में बदलाव लाने में योगदान दिया।

- इमरान खान, प्रधानमंत्री, पाकिस्तान

यह समाचार बेहद दुःखद है कि अटलजी नहीं रहे। मैं आज सुबह ही उनकी सेहत की जानकारी लेने के लिए एम्स गया था। मैं सोच भी नहीं सकता हूं कि यह दुःखद समाचार इतनी जल्दी मिलेगा। देश में शासन व्यवस्था को बेहतर बनाने और लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने में उनका योगदान अविस्मरणीय है। बहुमुखी व्यक्तित्व, वाणी और कर्त्तव्यपरायणता के धनी, भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी हमेशा याद किए जाएंगे।

- एम. वेंकैया नायडु, उपराष्ट्रपति

मैं निःशब्द हूं, शून्य में हूं, लेकिन भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा है। हम सभी के श्रद्धेय अटलजी हमारे बीच नहीं रहे। अपने जीवन का प्रत्येक पल उन्होंने राष्ट्र को समर्पित कर दिया था। उनका जाना, एक युग का अंत है। अटलजी आज हमारे बीच में नहीं रहे, लेकिन उनकी प्रेरणा, उनका मार्गदर्शन, हर भारतीय को, हर भाजपा कार्यकर्ता को हमेशा मिलता रहेगा।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारतीय राजनीति के आसमान का तेजस्वी तारा अस्त हो गया। भारत रत्न ही नहीं सचमुच भारत माता के मुकट का एक दैदीप्यमान रत्न, जिसने साहित्य हो या राजनीति, सामाजिक सौहार्द की बात हो या राजनीतिक संयम और सभी दलों के नेताओं को सुरम्य भाषा से प्रभावित कर, एकत्रित कर एक अनूठी मिसाल कायम की।

— सुमित्रा महाजन, लोकसभा अध्यक्ष

अटलजी की उदारता और उनके सख्त राष्ट्रहित निर्णयों का भारत क्या संपूर्ण विश्व गवाह है, क्योंकि ऐसे महापुरुषों को न केवल सुना और देखा गया, बल्कि उनको भारत रत्न से सुशोभित भी किया गया; 'अटल' मात्र उनका नाम नहीं; बल्कि उनके व्यक्तित्व की पहचान है।

— हरिवंश नारायण सिंह, उपसभापति, राज्यसभा

अटलजी एक लोकतांत्रिक नेता थे, जो विपक्ष की तर्कसंगत आलोचना करते थे। उनके निधन से दुःखी हूं। एक युग खत्म। भारत ने एक महान् पुत्र खो दिया है। मैं गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

— प्रणब मुखर्जी, पूर्व राष्ट्रपति

उनके निधन से गहरा आघात लगा है; वे अपने दुश्मनों के लिए भी कटु भाषा का इस्तेमाल नहीं करते थे; वे श्रेष्ठ नेता व उच्चकोटि के सांसद थे। वे किसी के मन को कभी चोट नहीं पहुंचाते थे।

– एचडी देवगौड़ा, पूर्व प्रधानमंत्री

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के दुःखद निधन के बारे में पता चला। वह एक शानदार वक्ता, प्रभावी कवि, अद्वितीय लोकसेवक, उत्कृष्ट सांसद और महान् प्रधानमंत्री रहे। वाजपेयी जी आधुनिक भारत के शीर्षस्थ नेताओं में से एक थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया।

- डॉ. मनमोहन सिंह, पूर्व प्रधानमंत्री

मैं वाजपेयी जी के कारण ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद पर पहुंच पाया। मुख्यमंत्री पद के लिए भाजपा ने मुझे समर्थन किया। इसका श्रेय वाजपेयीजी को जाता है। मैंने कभी सोचा नहीं था कि मैं लोकसभा का अध्यक्ष बन जाऊंगा, लेकिन वाजपेयीजी के कारण मैं लोकसभा का अध्यक्ष भी बना। वाजपेयीजी के व्यक्तित्व का ही नतीजा था कि शिवसेना और भाजपा के बीच गठबंधन लंबे समय तक चल सका।

– मनोहर जोशी, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष

उन्होंने अपने तप और अथक परिश्रम से पार्टी को सींच कर एक वटवृक्ष बनाया और भारतीय राजनीति में अमिट छाप छोड़ी। अटलजी एक ऐसे लोकप्रिय राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे थे जिनका मानना था कि सत्ता सेवा का साधन है और राष्ट्रीय हितों से समझौता किए बगैर उनका राजनीतिक जीवन बेदाग रहा और इसलिए लोगों ने राजनीतिक तथा सामाजिक सीमाओं से परे हटकर उनके प्रति प्यार और सम्मान दिखाया।

- अमित शाह, भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष

65 वर्षों का साथ छूट गया। अटलजी को केन्द्र में पहली स्थिर और गैर-कांग्रेसी सरकार के अगुवा के रूप में याद किया जाएगा। मुझे छह साल तक उनके 'डिप्टी' के तौर पर काम करने का विशेष अधिकार मिला। वरिष्ठ के रूप में हमेशा मुझे हरसंभसव तरीके से प्रोत्साहित किया।

- लालकृष्ण आडवाणी, पूर्व उपप्रधानमंत्री

बाल ठाकरे के बाद वाजपेयी के रूप में भीष्म पितामह को खो दिया। वे सत्ता के अहंकार से कोसों दूर थे। एनडीए गठबंधन सरकार में सभी घटक दले को साथ लेकर चले। उनका व्यवहार अभिभावक जैसा थी। उनके निधन से लोकतंत्र और देश की भारी हानि हुई है।

– उद्धव ठाकरे, अध्यक्ष, शिवसेना

अटलजी को मित्र कहते हुए मुझे सम्मान महसूस होता है। उनके राजनीति से अलग होने के बाद भी मैं उनके आवास पर जाता रहा।

-दलाई लामा, बौद्ध धर्मगुरु

वह एक निर्णायक नेता थे जो सभी को स्वीकार्य थे। अपने विचारों और आचरण से उन्होंने सार्वजनिक जीवन में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित किया। वह कर्मठ, निर्णायक नेता थे जो सभी को स्वीकार्य थे। उनके जैसे नेता के निधन से जो शून्य पैदा हुआ है, उसे भरना आसान नहीं होगा।

- मोहनराव भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अटल बिहारी वाजपेयी के निधन पर हम सभी दुःखी हैं। गजब के हास्यबोध और करुणा भाव रखने वाले वह महान् नेता थे। उन्हें लोग हमेशा याद रखेंगे।

– रतन एन टाटा, सुप्रसिद्ध उद्योगपति

अटलजी अप्रतिम आकर्षण वाले राष्ट्रीय नेता थे जिन्हें विभिन्न वैचारिक दलों से भी बराबर सम्मान मिला। उनके साथ मेरी कई यादगाार वार्ताएं हुईं। किसी भी उदीयमान नेता के लिए वह आदर्श हैं।

– श्री श्री रविशंकर

वाजपेयी जी एक कालजयी, आजातशत्रु, दूरद्रष्टा, सर्व समादेशी, अप्रतिम प्रधानमंत्री थे। उनको मैंने योग भी सिखाया और उनसे बहुत कुछ सीखा भी। उनका महाप्रयाण एक युग के अंत जैसा है।

– स्वामी रामदेव, योगगुरू

अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन से बहुत दुःखी हूं। वह हमारे राष्ट्रीय जीवन में एक विशाल व्यक्तित्व थे। वह पूरा जीवन लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए खड़े रहे और एक सांसद, केंद्रीय मंत्री और प्रधानमंत्री के तौर पर उनके हर काम में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता परिलक्षित हुई।

- सोनिया गांधी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष

आज भारत ने अपने एक महान् सपूत को खो दिया। अटल बिहारी वाजपेयी को करोड़ों लोग चाहते थे। हम लोग हमेशा उन्हें याद करेंगे। लाखों-करोड़ों लोग अटलजी से प्रेम और उनका सम्मान करते थे।

- राहुल गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष

हमने एक महान् नेता खो दिया। उनके निधन से मेरी व्यक्तिगत क्षति हुई है। हमने उनके साथ संसद में कई साल साथ बिताए। वाजपेयीजी का निधन देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

– शरद पवार, अध्यक्ष, राष्ट्रवादी कांग्रेस

अटलजी का भाषण सुनने का विरोधी दलों के नेताओं को भी इंतजार रहता था। सभी उनका सम्मान करते थे। अटलजी का स्नेह सबको राजनीति से ऊपर उठकर मिलता था। अटलजी में जरा भी घमंड न था; उनका निधन अपूरणीय क्षति है।

– मुलायम सिंह यादव, पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

वाजपेयी एक ऐसे व्यक्ति थे जिनकी विशेषताओं की तुलना शब्दों में नहीं की जा सकती है। वे ओजस्वी कवि, नेता और कुशल प्रशासक थे।

– शरद यादव, पूर्व केंद्रीय मंत्री

कवि मन वाले अटल बिहारी वाजपेयी के सार्वजनिक जीवन में योगदान को हमेशा ही याद किया जाएगा। वह देश के एक ऐसे नेता थे जो पार्टी हित से ऊपर उठकर समाज के हित में सोचते थे।

– मायावती, बसपा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

एक महान जीवन का अंत लेकिन एक प्रेरणा जो सदा जीवित रहेगी। ऐसे विराट व्यक्तित्व के स्वामी पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को हमारी भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

– अखिलेश यादव, सपा अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

अटलजी का जाना राजनीति में एक महायुग का अवसान है। एक अपूरणीय क्षति है। अटलजी के स्वर्गवास से भारत मां ने एक अपना महान् सपूत खो दिया है। अटलजी के निधन से राष्ट्र को जो क्षति हुई है उसकी भरपायी होना कठिन है।

- योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

भारतीय राजनीति के एक युग का अंत हो गया; वह योद्धा थे। वह प्रेरणा थे। वह हमारे बीच नहीं रहे, इसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता।

– शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

अटलजी हमारे बीच नहीं रहे। मैंने जिन नेताओं को देखकर राजनीति की सीढ़ियां चढ़ीं, उनमें से वाजपेयी एक थे।

- देवेंद्र फडणवीस, मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र

अटलजी के निधन से राष्ट्र को हुई क्षति अपूरणीय है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एक उच्चकोटि के राजनैतिक चिंतक व विचारक थे। उनमें अपने राजनैतिक विरोधियों को भी साथ लेकर चलने की क्षमता थीं। उनके व्यंग्य व हास्य में भी प्रेरणा मिलती थी। वे हमेशा समाज के भविष्य की सोचते थे।

- मनोहरलाल खट्टर, मुख्यमंत्री, हरियाणा

जन-जन के प्रिय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के निधन से पूरा देश स्तब्ध है। भारत माता के मुकुट का एक प्रदीप्त रत्न खोया है। ईश्वर से प्रार्थना है अटलजी की आत्मा को शांति प्रदान करें।

- त्रिवेंद्र सिंह रावत, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड

भारत ने अपने सबसे बड़े नेता को खो दिया है।

– नवीन पटनायक, मुख्यमंत्री, ओडिशा

अटलजी के रूप में देश ने सबसे बड़ी राजनीतिक शख्सियत के साथ ही प्रख्यात वक्ता, कवि, लेखक, चिंतक, विचारक और करिश्मायी व्यक्तित्व को खो दिया है। वाजपेयी उच्च राजनीतिक मूल्यों एवं आदर्शों की बदौलत सार्वजनिक जीवन में उच्च शिखर पर पहुंचे। उनमें अपने व्यक्तित्व के बदौलत राजनीतिक सीमाओं से परे सभी विचारधारा के लोगों को साथ लेकर चलने की अद्भुत क्षमता थी और जीवन में लोकतांत्रिक मूल्यों को सर्वोपरि रखा।

– नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री, बिहार

मैं बहुत दुःखी हूं कि महान् राजनेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयीजी हमारे बीच नहीं रहे। उनका निधन हमारे राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी क्षति है। मैं उनसे जुड़ी यादों को हमेशा संजोकर रखूंगी। उनके परीवार और प्रशंसकों के प्रति मेरी गहरी संवेदना है।

– ममता बनर्जी, मुख्यमंत्री, पश्चिम बंगाल

मुझे बहुत दुःख है, यह देश के लिए बड़ा नुकसान है।

– अरविंद केजरीवाल, मुख्यमंत्री, दिल्ली

ऋषिनुमा अटल बिहारी वाजपेयी के निधन की खबर सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। वह मेरे लिए पिता समान थे। मैं इस समय उतनी ही दुःखी हूं, जितनी मैं अपने पिता के गुजर जाने के समय थी।

– लता मंगेशकर, सुप्रसिद्ध गायिका

महान् राजनेता और पूर्व प्रधानमंत्री अटल विहारी वाजपेयी के निधन का समाचार सुनकर अत्यंत दुःख हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

– रजनीकांत, प्रख्यात अभिनेता

एक कवि, एक लेखक, एक प्रबुद्ध मन और दयालु शख्स इस दुनिया से रूखसत हो गए हैं। वह मेरे पिता और उनके कामों के प्रशंसक थे और ऐसे कई अवसर रहे, जब मैं दोनों की मुलाकात के दौरान मौजूद रहा। मेरे पिता अटलजी को तब से जानते थे, जब वह (अटलजी) छात्र थे। वह अटलजी की वाक्शैली और सज्जनता से बेहद प्रभावित थे। उनकी भाषण कला बेजोड़ थीं और शब्दों का उपयोग शानदार था।

- अमिताभ बच्चन, सुप्रसिद्ध अभिनेता

संपादकीय टिप्पणियां

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन के बाद देशभर के अखबारों ने अपनी संपादकीय टिप्पणियों में उन्हें महान् नेता बताया है। हम यहां कुछ राष्ट्रीय हिंदी समाचार-पत्रों की संपादकीय टिप्पणियां प्रकाशित कर रहे हैं :

दैनिक जागरण

विराट व्यक्तित्व की विदाई

हाल के भारतीय इतिहास की सबसे लोकप्रिय और सर्व स्वीकार्य राजनीतिक शख्सियत अटल बिहारी वाजपेयी का अवसान एक ऐसे राजनेता की विदाई है, जो जननायक के साथ-साथ महानायक की छवि से लैस हो गए थे। उनके निधन के साथ ही नेताओं की वह पीढ़ी ओझल होती दिखती है, जिसने खुद को नेता से राजनेता यानी स्टेट्समैन में तब्दील कर लिया था। बीमारी के कारण वह एक अर्से से राजनीतिक तौर निष्क्रिय थे, लेकिन वह अपनी उपस्थिति का आभास कराते थे। इसका कारण यही था कि वह राजनीतिक जीवन में सक्रिय लोगों के लिए एक प्रेरक उदाहरण बन गए थे। यह उनके विराट व्यक्तित्व का ही प्रभाव था कि उनकी मिसाल उनके विरोधी भी देते थे। आज जब यह अकल्पनीय है कि दूसरे दलों के लोग किसी अन्य दल के शिखर पुरुष का उल्लेख उसकी प्रशंसा करते हुए करें तब अटल बिहारी वाजपेयी का जाना एक राष्ट्रीय क्षति है। इस क्षति का अहसास इसलिए कहीं गहरा है, क्योंकि उनके जैसे समावेशी राजनीति के शिल्पकार दुर्लभ हैं। वह कितने विरले थे, यह इससे प्रकट होता है कि आज उनके जैसा भरोसा पैदा करने वाला नेता दूर-दूर तक नहीं नजर आता। उनके यश की कीर्ति जिस तरह फैली उसकी मिसाल मिलना मुश्किल है। उनकी लोकप्रियता दलगत सीमाओं से परे पहुंच गई थी, तो केवल इसलिए नहीं कि वह भाजपा के कद्दावर नेता थे और उनकी भाषण शैली सभी को मंत्रमुग्ध करती थी। इसके साथ-साथ वह उस राजनीति के वाहक भी थे जिसके कुछ मूल्य और मर्यादाएं थीं।

जनसत्ता

समन्वय के सूत्रधार

वे पहले गैर-कांग्रेसी नेता थे, जिन्होंने नेहरू-इंदिरा गांधी के बाद सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री का कार्यकाल तय किया। प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने देश के आम लोगों की जरूरतों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया। अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए उन्होंने कई साहसिक कदम उठाए। स्वर्णिम चतुर्भुज योजना के जरिए भारत के कोने-कोने तक सड़कों का जाल बिछाने और हर घर तक बिजली पहुंचाने संबंधी केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग की योजनाओं को गति दी। नदियों को आपस में जोड़कर जल संबंधी समस्याओं से निपटने का विचार दिया, कावेरी जल विवाद को सुलझाया। सभी को आवास संबंधी सुविधा उपलब्ध कराने के लिए शहरी सीलिंग को समाप्त किया। इन्हीं योजनाओं और उनकी सूझ-बूझ का नतीजा था कि अर्थव्यवस्था अपनी बेहतरी के दौर में प्रवेश कर सकी। सबसे उल्लेखनीय काम उन्होंने भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश बना कर किया। दुनिया के तमाम देशों की कड़ी नजर के बावजूद उनके कार्यकाल में पोखरण परमाणु परीक्षण किया गया। हालांकि उसके बाद भारत को दुनिया के शक्तिशाली देशों की टेढ़ी नजर का सामना करना पड़ा, पर अटल बिहारी वाजपेयी ने उसकी परवाह नहीं की। इस तरह भारत परमाणु शक्ति के रूप में दुनिया में पहचाना जाने लगा।

अमर उजाला

अपने मन के अटल

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के निधन से देश ने ऐसा जननेता खो दिया है, जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकेगी। वह सही मायने में ऐसे लोकतंत्रवादी नेता थे, जिन्हें एक विचारधारा के खांचे में सीमित नहीं किया जा सकता। तमाम राजनीतिक दलों में उनकी स्वीकार्यता तो थी ही, उनकी लोकप्रियता धार्मिक, क्षेत्रीय या किसी और दायरे में बंधी नहीं थी। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि उन्होंने बंधी-बंधाई लीक से हटकर जहां जरूरी हुआ, उदारता दिखाई और जब साहसिक कदम उठाने की जरुरत महसूस हुई, तो गुरेज नहीं किया। एक उदाहरण के तौर पर ही देखें, तो यह हैरत की बात नहीं है कि आजादी के बाद से जो कश्मीर मसला आज तक उलझा हुआ है, उसे सुलझाने की दिशा में सबसे विश्वसनीय प्रयास अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल में हुआ था, जब उन्होंने जम्हूरियत, इंसानियत और कश्मीरियत की बात की थी। यह महज संयोग ही है कि प्रधानमंत्री मोदी ने भी पंद्रह अगस्त के अपने भाषण में अटल जी का स्मरण करते हुए कश्मीर के ऐसे ही समाधान की बात की। अटल जी ने अपने सार्वजनिक जीवन की जब शुरुआत की थी, तब संसद में कांग्रेस का वर्चस्व था, लेकिन प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू तक ने उनकी प्रतिभा और प्रखरता को पहचान लिया था।

हिन्दुस्तान

अलविदा अटल जी

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनीति के सबसे सहज सरल व्यक्तित्व थे। उनके पूरे जीवन वृत्त को देखें, तो लगता है कि वह बिना किसी अथक प्रयास के अपने आप ही न सिर्फ लोकप्रिय हो गए, बल्कि सर्व-स्वीकार्य भी। प्रधानमंत्री पद तक पहुंचने वाले नेताओं में तो वह कई तरह से विरले ही थे। सहज सरल व्यक्तित्व के मामले में उनकी तुलना कुछ हद तक सिर्फ लाल बहादुर शास्त्री से की जा सकती है। बोल-चाल, रहन-सहन में वह हमेशा ही हमारे बीच के किसी शख्स की तरह ही लगते थे। न कोई तड़क-भड़क, न कोई ओढ़ा हुआ व्यक्तित्व। वह आदर्श बघारते हुए नहीं, जीवन के हर रस का मजा लेते हुए दिखाई देते थे। लोगों से जुड़ने का उनके पास एक सशक्त औजार था, उनकी वाणी। बहुत बड़े जन-समुदाय को मंत्र-मुग्ध कर देने वाला उनके जैसा कोई दूसरा कलाकार भारतीय राजनीति को नहीं मिला। मुख पर सरस्वती विराजने का मुहावरा जितना अटल बिहारी वाजपेयी पर फिट बैठता है, उतना शायद भारत के किसी दूसरे नेता पर फिट नहीं बैठता। जन-समुदाय ही नहीं, मंत्र-मुग्ध तो उन्होंने बरसों तक पूरे देश को ही किए रखा। अपने विरोधियों को भी।

राजस्थान पत्रिका

काल के कपाल पर

लंबी बीमारी के दौरान कई बार मौत को मात देने वाले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आखिरकार 'काल के कपाल पर' लिखने-मिटाने का सिलसिला हमेशा के लिए खत्म कर दिया। अपना 72वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा देश तभी अनहोनी की आशंका से गमगीन हो गया था, जब अपने समय के सर्वाधिक चहेते नेता की हालत बेहद नाजुक होने की सूचना मिली। इसके एक दिन बाद ही आशंका सच हो गई। वाजपेयी का जीवन विरोधाभासों के बीच राजनीति में सच्चाई, मानवीयता और सदाशयता के लिए रास्ता निकालते रहने की मिसाल के तौर पर याद किया जाएगा। लोकसभा में अपने पहले भाषण के बाद ही तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उनमें भावी प्रधानमंत्री की छवि देखी थी। बाद में तीन बार प्रधानमंत्री बनकर उन्होंने नेहरू की भविष्यवाणी को न सिर्फ सच किया, बल्कि सही मायनों में कांग्रेस के उत्तराधिकार को चुनौती भी दी। गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में अपना कार्यकाल पूरा करने वाले एकमात्र शख्स रहे वाजपेयी ने पहली बार देश को यह भरोसा दिलाया कि कोई अन्य राजनीतिक दल भी बेहतर विकल्प हो सकता है। आज अगर केंद्र में बहुमत की भाजपा सरकार है तो उसकी नींव वाजपेयी ने ही रखी।

दैनिक ट्रिब्यून

अटल सत्य: शून्य भरना न होगा संभव

उन्हें भारत रत्न तो बहुत बाद में मिला, लेकिन वे वाकई भारत रत्न थे। आज जब हमारे बीच अटल बिहारी वाजपेयी नहीं हैं, तो लगता है भारतीय राजनीति के आकाश में एक बड़ा शून्य पैदा हो गया है। ओजस्वी वक्ता, प्रखर विचारक, कवि हृदय और सादगी से जीवन जीने वाले अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिक शुचिता के पक्षधर थे। धुर दक्षिणपंथी राजनीतिक विचारधारा वाले राजनीतिक दल में शिखर तक पहुंचाने में उनका समावेशी व्यक्तित्व ही सहायक था। सार्वजनिक जीवन और राजनीतिक जीवन में इसी सोच के चलते वे सामंजस्य बना पाये। उनकी उदारवादी छवि राजनीतिक दुराग्रहों के बावजूद बाधित नहीं हुई। ओजस्वी वक्ता व तार्किक क्षमता के कारण पहले प्रधानमंत्री पं. नेहरू ने कह दिया था कि वे एक दिन देश के प्रधानमंत्री बनेंगे। अटल जी के व्यक्तित्व की एक खासियत यह रही कि भले ही वे किसी राजनेता के मुखर आलोचक रहे हों, मगर उनके गुणों को स्वीकारते रहे हैं। पं. नेहरू की नीतियों की मुद्दों पर आलोचना करने वाले अटल जी ने उनके जाने पर कहा था कि सूर्य चला गया, हमें तारों की छाया में राहें तलाशनी होंगी। लगता है मौजूदा वक्त में भारत के राजनीतिक आकाश में फिर एक सूर्य चला गया है, हमें तारों की रोशनी में आगे की दिशा तय करनी होगी।

राष्ट्रीय सहारा

अलविदा अटल

अटल बिहारी वाजपेयी का जाना सही अर्थों में एक युगांत है। भारतीय लोकतंत्र ने जो भी गिने-चुने कद्दावर राजनेता पैदा किये हैं, अटल जी उनमें से शीर्ष स्थान पर रखे जा सकते हैं। भाजपा के शायद वह एकमात्र ऐसे नेता थे, जिन्हें ''अजातशत्रु' कहा जा सकता है। उन्हें जितना सम्मान अपनी पार्टी में प्राप्त था, उसके कहीं ज्यादा दूसरी पार्टियों के नेता उनका सम्मान करते थे। वह जब संसद में बोलने के लिए खड़े होते थे तो सभी राजनीतिक दलों के नेता उनके भाषणों को सुना करते थे। पार्टी से परे जाकर सम्मान प्राप्त करने के इस दुर्लभ गुणों के कारण ही वह भाजपा को स्वीकार्य और सार्वजनिक स्वरूप दे सके। उनके नेतृत्व में भाजपा का हिंदुत्व विनम्र और समन्वयवादी हुआ था। इसी के चलते भाजपा के अंदर नम्रता और लचीलापन आया जिससे कि भाजपा का गठबंधन हो सका। यह लचीलापन आज की राजनीति का अपरिहार्य गुण बन गया है। अटल जी को गठबंधन की व्यवहारवादी राजनीति का वास्तविक सूत्रधार कहा जा सकता है। उनके नेतृत्व में ही पहली बार भाजपा में यह आत्मविश्वास पैदा हुआ कि वह कांग्रेस का विकल्प बन सकती है।

अटलजी: भारतीय राजनीति के 'अजातशत्रु'

एम. वेंकैया नायडु

अटलजी आखिर चले गए और यह लड़ाई हार गए। वे अदृश्य क्षितिज की ओर अपनी यात्रा पर चल दिए। यह एक ऐसी लड़ाई है जिसे अब तक कोई नहीं जीत पाया है और अटलजी भी अपवाद नहीं हैं। लेकिन जो चीज उन्हें अपनी पीढ़ी के अन्य लोगों से बेहद अलग बनाती है वे हैं अनेक लड़ाइयां, जो उन्होंने अपने जीते जी बुनियादी मूल्यों और प्रतिबद्धता के साथ 'अटल' रहते हुए लड़ीं। वे अपने पूरे जीवन में 'अटल' और 'बिहारी' (पथिक या स्वप्नदर्शी) दोनों रहे। लेकिन नए भारत का सपना देखते हुए भी उन्होंने अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा।

अटलजी से मेरी पहली मुलाकात साठ के दशक के उत्तरार्ध में हुई थी, जब मैं नेल्लोर शहर में एक टांगा में बैठकर उनके दौरे पर आने की घोषणा करता था। तब मैंने शायद ही यह कल्पना की थी कि एक दिन मुझे पार्टी अध्यक्ष बनने का और वाजपेयीजी तथा आडवाणीजी के बीच बैठने का सौभाग्य प्राप्त होगा। तब से, मुझे बहुतायत में उनका प्यार, स्नेह, मार्गदर्शन और संरक्षण पाने का सौभाग्य मिलता रहा। मैं इसे एक दुर्लभ सम्मान मानता हूं कि ऐसे गुणवान व्यक्ति का मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मुझे मिला। आमतौर पर कहा जाता है कि किसी के भी चेहरे पर उसके भीतरी तत्वों की छाप होती है। अटलजी इसका एक अच्छा उदाहरण थे। उनके विचारों की स्पष्टता, मजबूत प्रतिबद्धता, देश के लिए विजन और उनकी अमिट मुस्कान, मेरे विचार में, अटलजी के इन भीतरी तत्वों की स्पष्ट अभिव्यक्ति हैं।

2009 तक के अपने 65 वर्षों के सक्रिय जीवन में, अटलजी 56 वर्ष विपक्ष में रहे और सिर्फ नौ साल सत्ता में रहे। वे लोकसभा के लिए दस बार निर्वाचित हुए और राज्यसभा के लिए दो बार। वे मोरारजी देसाई मंत्रिमंडल में विदेश मंत्री रहे और बाद में तीन बार प्रधानमंत्री बने। लेकिन चाहे वे विपक्ष में रहे हों या सत्ता में, अटलजी ने आजादी के बाद से ही देश के विकास में मौलिक योगदान

दिया। अटलजी सार्वजनिक वक्ता के रूप में अग्रगण्य थे और संसद से लेकर राजनीतिक क्षेत्र तक की उन्होंने व्यापक प्रशंसा हासिल की, जिसमें जवाहरलाल नेहरू भी शामिल थे। कोई कह सकता है कि सत्ता की जिम्मेदारी के बिना बड़ी-बड़ी बातें करना आसान है। लेकिन अटलजी ने पहले विदेश मंत्री रहते हुए और बाद में इस विशाल देश के प्रधानमंत्री के रूप में संबोधित करते हुए ऐसे संदेहों को निर्मूल साबित किया। उन्होंने हमारे पड़ोसियों के साथ ठंडे पड़े संबंधों में सुधार करने के लिए थोड़े समय में ही नई जमीन तोड़ी जिसने हमारी कूटनीति के लिए एक नया परिप्रेक्ष्य प्रदान किया।

प्रधानमंत्री के रूप में, उन्होंने देश को परेशान करने वाली समस्याओं को समझने और उनके निराकरण के लिए उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया। उन्होंने निर्णायक रूप से दिखा दिया कि वे केवल ऐसे वक्ता नहीं हैं, जो विपक्ष में रहने के दौरान कल्पना की उड़ान की स्वतंत्रता का आनंद ले रहे थे, बल्कि जब देश की समस्याओं को हल करने का अवसर हो तो एक निर्णायक नेता भी हैं। उन्होंने विपक्षी नेता के रूप में कई लड़ाइयां जीतीं, लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में उससे भी ज्यादा लड़ाइयों में जीत हासिल की। प्रधानमंत्री के रूप में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'मिशन कनेक्ट इंडिया' का नेतृत्व किया, जिसमें उन्होंने दूरसंचार, राष्ट्रीय राजमार्गों सहित बुनियादी ढांचे, ग्रामीण सड़कों, हवाई अड्डों और बंदरगाहों, निजी क्षेत्रों की भागीदारी, विनिवेश जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों की एक नई रूपरेखा बनाई। उन्होंने अपने को एक उत्कृष्ट सुधारक साबित किया जिनकी बुद्धिमत्ता का लाभांश देश को आज तक हासिल हो रहा है। अटलजी ने शास्त्रीजी के नारे 'जय जवान-जय किसान' में 'जय विज्ञान' जोड़ा, जो वर्तमान समय में ज्ञान के महत्व को समझने की उनकी भावना को रेखांकित करता है।

वाजपेयीजी नरमदिल होने के साथ सख्त भी थे। उनकी पहली विशेषता जहां लंबे समय तक देखी गई, वहीं उनकी सख्ती तब देखने को मिली जब पोखरण-2 आयोजित किया गया और बाद में कारगिल की ऊंचाई से जिस तरह हमलावरों को पीछे हटने पर मजबूर किया गया। राजनीतिक क्षेत्र में उनका लोगों के साथ जिस तरह का व्यवहार था और केंद्र में नाजुक समय में जिस तरह से उन्होंने गठबंधन सरकार का नेतृत्व किया, उससे उनके व्यक्तित्व की कोमलता स्पष्ट झलकती थी। अपने विशिष्ट गुणों की वजह से ही श्री वाजपेयी ऐसे पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री बने, जिन्होंने अपना कार्यकाल पूरा किया। वे तीन बार प्रधानमंत्री बने। उन्होंने एक वैकल्पिक राजनीतिक सोच प्रदान की और सत्तारूढ़ पार्टी के लिए एक वास्तविक विकल्प दिया। उन्होंने सफलतापूर्वक 23 दलों वाले गठबंधन का नेतृत्व करते हुए साबित किया कि वे ऐसे नेता थे जो स्थिर सरकार प्रदान करने में समर्थ थे। वाजपेयीजी ने भारतीय राजनीति में कई तरह से योगदान दिया। उन्होंने हमारे संविधान में स्थापित आदर्शों की वास्तविक भावना के अनुसार लोकतंत्र को मजबूत बनाने में बड़ा योगदान किया।

इतिहास में उनका नाम देश में सुशासन के समानार्थी के रूप में लिखा जाएगा। आम आदमी और राजनीतिक वर्ग दोनों ही उनकी सौम्यता, चरित्र और आचरण से प्रभावित थे। जिस चीज ने श्री वाजपेयी को सारे देश का चहेता बनाया था, वह थी उनकी खुद को समाज के विभिन्न वर्गों से जोड़ने की भावना। यह उनके लिए संभव था, क्योंकि वे भारत के लिए जैसा बोलते थे और जिन बुनियादी मूल्यों में विश्वास रखते थे, उनमें कोई विरोधाभास नहीं था। यह इसलिए था क्योंकि वे एक सच्चे भारतीय बने रहे, जो सभी भारतीयों को आकर्षित करते थे। यह अटलजी की विशेषता थी। इस प्रक्रिया में, उन्होंने मेरे जैसे लाखों लोगों को सच्ची राष्ट्रवादी विचारधारा का पालन करने के लिए मंत्रमुग्ध और प्रेरित किया। वे राष्ट्रीय प्रतीक थे और सच्चे 'अजातशत्रु' थे, जिनका कोई दुश्मन नहीं था।

अपने शुरुआती दिनों में हम अटलजी को प्यार से 'तरुण हृदय सम्राट' कहा करते थे। बीमारी की चपेट में आने तक वे ऐसे ही बने रहे और उनकी संक्रामक मुस्कान हमेशा बनी रही। भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व, वक्तृत्व, कर्तृत्व, मित्रत्व की उत्कृष्टता सब उनके नेतृत्व में समाहित था, जिसे लंबे समय तक याद किया जाएगा। वे 'दार्शनिक राजा' के सांचे में ढले थे। एक राजा जिसने सभी भारतीयों के दिलों पर अपने शब्दों और कार्यों से राज किया। ऐसे दूरदर्शी राजनेता इस दुनिया में कभी कभार ही होते हैं। उनकी विरासत को आगे बढ़ाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

अपने शुरुआती दिनों में हम अटलजी को प्यार से 'तरुण हृदय सम्राट' कहा करते थे। बीमारी की चपेट में आने तक वे ऐसे ही बने रहे और उनकी संक्रामक मुस्कान हमेशा बनी रही। भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी का व्यक्तित्व, वक्तृत्व, कर्तृत्व, मित्रत्व की उत्कृष्टता सब उनके नेतृत्व में समाहित था, जिसे लंबे समय तक याद किया जाएगा। वे 'दार्शनिक राजा' के सांचे में ढले थे। एक राजा जिसने सभी भारतीयों के दिलों पर अपने शब्दों और कार्यों से राज किया। ऐसे दूरदर्शी राजनेता इस दुनिया में कभी कभार ही होते हैं। उनकी विरासत को आगे बढ़ाना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक भारत के उपराष्ट्रपति हैं)

राम का आदर्श, कृष्ण का सम्मोहन, बुद्ध का गांभीर्य, चाणक्य की नीति और विवेकानंद की ओजस्विता से परिपूर्ण था अटलजी का जीवन : शिव कुमार शर्मा

IANS

स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के साथ 50 साल तक छाया की तरह रहने वाले श्री शिव कुमार शर्मा उनकी अंतिम सांस तक सेवा में जुटे रहे। सर्वोच्च न्यायालय में अधिवक्ता रहे श्री शर्मा 1969 से उनके सहयोगी थे। पिछले दिनों नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर कमल संदेश के सहायक संपादक **संजीव कुमार सिन्हा** ने उनसे अटलजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, संगठनात्मक दायित्वों, प्रशासनिक उपलब्धियों, रुचियों सहित अनेक अनछुए पहलुओं पर बातचीत की।
प्रस्तुत है मुख्यांश–

सबसे पहले यह बताइए कि आपका अटलजी से कब और कैसे संपर्क हुआ?

मैं संघ का स्वयंसेवक हूं, जनसंघ का भी कार्यकर्ता था, तो इस नाते कार्यक्रमों में अटलजी से मुलाकात होती रहती थी। दीनदयालजी की हत्या के बाद मुझे ऐसा लगा कि अटलजी अकेले रहते हैं, किसी को उनके साथ रहना चाहिए। मैंने इस संबंध में उनसे प्रार्थना की। उन्होंने बहुत मना किया, ''नहीं, भाई नहीं।'' उन्होंने एक मार्मिक बात कही, "देखो शिवकुमारजी, आप तो परिवारवाले हो, सर्वोच्च न्यायालय में वकालत करते हो और मेरी पार्टी ऐसी नहीं है कि जो आपको कुछ दे सके या मैं कुछ दे सकूं"। तो मैंने कहा, "साहब ऐसा है, मैं जब आपके पास आऊंगा तो अपने सारे पुल तोड़कर आऊंगा। कोई जिम्मेदारी नहीं है मेरे पास। अगर आप सकुशल रहे तो भारतीय जनसंघ फलेगी–फूलेगी और मेरे जैसे करोड़ों लोगों का परिवार अपने आप पल जाएगा।" उन्होंने कहा, "अगर आपकी ऐसी दृढ़ स्थिति है तो चलिए, लग जाइए हमारे साथ।" तो 1969 से उनके साथ हूं और आखिरी सफर तक भी उनके साथ रहा।

अटलजी की पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में बताइए?

देखिए, इनके पूर्वज बटेसर के रहनेवाले थे। इनके बाबा भागवत कथा में प्रवीण थे। गांवों में जा–जाकर भागवत सुनाया करते थे। लोगों को जागृत करते थे। वो आशुकवि थे। हाथ के हाथ कविता बना देते थे। इनके पिताजी विद्यालय में शिक्षक थे और कवि थे। कवि सम्मेलनों में अटलजी भी उनके साथ जाते थे। ये भी कविताएं करने लग गए। तो कविता इनको विरासत में मिली है। दोनों पिता–पुत्र ने लॉ की पढ़ाई एक ही कक्षा में, एक ही हॉस्टल में और एक ही कमरे में रहकर की। इनके पिताजी तो एलएलबी पास कर गए। उस समय एक साथ दो परीक्षाएं पास कर सकते थे, एमए भी कर सकते थे। अटलजी एलएलबी तो पूरा नहीं कर पाए, राजनीतिक शास्त्र में प्रथम श्रेणी से एमए उत्तीर्ण किया। बीए में भी फर्स्ट डिवीजन आए थे सारे मध्य प्रदेश क्षेत्र में। वहां राज्य का नियम था कि जो फर्स्ट क्लास आता था, उसको वजीफा देते थे। परंतु एक शर्त रहती थी कि आपको राजा की नौकरी करनी पड़ेगी। अटलजी ने कहा कि आपका वजीफा नहीं चाहिए और नौकरी भी मुझे नहीं करनी। वो कानपुर गए। डीएवी कॉलेज से एमए किया। फिर वो लखनऊ आ गए।

लखनऊ में पांचजन्य के संपादक रहे। राष्ट्रधर्म, स्वदेश, वीर अर्जुन, तरुण भारत का भी संपादन किया। उसके बाद फिर राजनीति में आ गए।

अटलजी में ऐसी क्या बातें थीं जिसके चलते आप आधी सदी तक उनसे जुड़े रहे?

देखिए, ताली एक हाथ से नहीं बजती है। मैंने तो पूरा समर्पण कर दिया। मैंने उनसे कहा था कि मैं आपसे कुछ मागूंगा नहीं, न राजनीतिक पद मांगूगा, न पैसा मांगूगा। मैं सिर्फ आपकी सेवा करूंगा। तो सेवा करने गया था वहां और वो सेवा मैंने की है। इसलिए 50 साल तक निभ गया। उनका भी स्नेह मिला हमको। अगर उनका स्नेह नहीं होता तो कैसे इतना संभव हो पाता! मैंने कहा न, दिस इज नॉट ए वनवे ट्रैफिक। उनकी कृपा रही हम पर। मैंने अपने आपको उन्हें समर्पण कर दिया और उनका मेरे ऊपर वरदहस्त रहा।

आपका काम क्या रहता था अटलजी के साथ?

मैं उनके सारे कागज–पत्र संभालता था। प्रवास में साथ जाता था। उनकी जो जरूरत होती थी उसको पूरी करने की कोशिश करता था।

अटलजी की दिनचर्या क्या रहती थी?

जब वे स्वस्थ थे तो दिन–रात भ्रमण किया करते थे। दिल्ली में बहुत कम रुकते थे, जब संसद के सत्र होते थे तभी रुकते थे अन्यथा सारे देश का हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक, अटक से लेकर कटक तक दौरा करते रहते थे। 2005 में उन्होंने सार्वजनिक घोषणा की थी कि मैं राजनीति में सक्रिय नहीं रहूंगा, तबसे वे राजनीति में सक्रिय नहीं रहे। हां राष्ट्रपति का जो चुनाव होने वाला था, जिसमें भैरोसिंह शेखावत खड़े हुए थे, तो एनडीए के जितने घटक थे, उनको अटलजी ने बुलाया था और हमारे घर पर ही बैठक हुई। उसके बाद से कुछ नहीं। 2009 में तो उन्हें स्ट्रोक हो गया। करीब दो महीने अस्पताल में रहे वेंटिलेटर पर और दो महीने बाद फिर आ गए।

अटलजी सबसे अधिक खुश और सबसे अधिक दुःखी कब होते थे?

सबसे अधिक प्रसन्न तो तब हुए जब परमाणु विस्फोट किया और जब प्लेन हाइजैक हो गया तब वो दुःखी थे, हम भी दुःखी थे। हम लोगों को आश्वासन दिया था कि भई, सब सकुशल आ जाएंगे। अक्षरधाम पर हमला हुआ, संसद पर हमला हुआ, इन सबका उन्होंने हिम्मत से सामना किया।

कभी आपने उनको क्रोधित होते हुए देखा?

मैंने कभी नहीं देखा।

राजनीति और साहित्य के अलावा अटलजी की अन्य रुचियां क्या थीं?

जब कार में जा रहे होते थे, उस समय मनन करते रहते थे, लिखते रहते थे। जो टुकड़ा मिला कागज का, उस पर कुछ लिख लिया।

अटलजी कविताओं में व्यंग्य भी लिखते थे। हास्य भी लिखते थे और क्रोध भी लिखते थे। और सामयिक चीज भी लिखते थे। अटलजी ने कविताएं कभी अपने लिए नहीं लिखी। उनकी कविताएं समाज के लिए और पूरी मानवता के लिए होती है। जैसे उनकी कविताएं – आओ फिर से दीया जलाएं, पहचान, गीत नहीं गाता हूं, न चुप हूं न गाता हूं, गीत नया गाता हूं, ऊंचाई, कौन कौरव कौन पांडव, दूध में दरार पड़ गई, जीवन बीत चला, मौत से ठन गई, राह कौन सी जाऊं मैं, मैं नींव का पत्थर पार हुआ, आओ मन की गांठें खोलें, नई गांठ लगती है, अमर आग है, आज सिंध में ज्वार उठा है, परिचय, कदम मिलाकर चलना होगा, हिंदू तन मन, वज्र से कठोर सहित अनेक कविताएं उल्लेखनीय हैं।

अटलजी में एक अच्छा गुण था कि वे धैर्य से सुनते थे। 'तू आया-मैं गया', ऐसा नहीं करते थे। आप अगर गए हैं और उनके पास समय है तो आपकी पूरी बात सुनेंगे। जब तक आप संतुष्ट नहीं हों, तब तक नहीं जाएंगे और कोशिश करेंगे वो आपकी मदद कर सकें। वे हरदम प्रयत्नशील रहते थे।

फुरसत के समय में वे क्या करते थे?

भई, फुरसत थी कहां उनको? दिन–रात पार्टी का काम करते थे। अध्यक्ष रहे 7 साल, पहले जनसंघ के, बाद में भाजपा के। फुरसत तो मिलती नहीं थी।

वैसे, वे खाने–पीने के शौकीन थे। खाना खुद बना लेते थे। सिनेमा देखने के शौकीन थे। नाटक देखना अच्छा लगता था उनको। संगीत बहुत पसंद था, विशेष रूप से शास्त्रीय संगीत। लता मंगेशकर को सुनते थे।

अटलजी ने संपादकीय लिखी, कविताएं लिखीं, लेख लिखे। लेखन के लिए कब समय निकालते थे?

उनका अधिकांश लेखन प्रवास में होता था।

अटलजी को भोजन में क्या प्रिय था?

अटलजी को भोजन में खिचड़ी बहुत पसंद थी। वो खुद बनाते थे खिचड़ी।

ज्यादातर वो दाल–रोटी खाते थे। सुबह ब्रेड और दूध। रात को दूध पीते थे, क्योंकि बालपन से उनको दादा जी दूध पिलाते थे।

एक बार दीनदयालजी और अटलजी घर गए। रात्रि को विश्राम किया तो दूध लाया गया। अटलजी ने कहा, ''भई, दीनदयालजी को दूध पसंद नहीं है।'' कहा गया, ''दूध तो पीना पड़ेगा। तुम जैसे दूध पी रहे हो, वैसे वो पीएंगे।'' तो दीनदयालजी को मुश्किल से दूध पिलाया गया। उनको दूध कम पसंद था।

अटलजी को दूध चाहिए था। मिठाई भी खूब खाते थे।

कोई खास मिठाई पसंद थी उनको?

कोई खास मिठाई नहीं।

एक बार मुंबई गए थे हम। वहां मेजबान के यहां खाना खाते–खाते रसगुल्ले आ गए, तो मेजबान ने पूछा– ''रसगुल्ला कैसा लगा अटलजी आपको?'' अटलजी बोले– ''बहुत अच्छा।'' तुरंत दो रसगुल्ले और डाल दिए। सात दिन का प्रवास था महाराष्ट्र का। अब जहां जाए वहां रसगुल्ला! अटलजी बोले– ''अरे ये रसगुल्ला क्यों मेरे पीछे लगा हुआ है!'' तो बात यह थी कि उनके साथ पत्रक में लिखा हुआ आया कि इनको रसगुल्ला बहुत पसंद है। अटलजी बोले, ''अरे भई, मुझे तो सभी मिठाई पसंद है, रसगुल्ला का तो नाम हटाओ यहां से!"

अटलजी की भाषण कला के बारे में बताइए?

सरस्वती इनकी जिह्वा पर विराजमान थी। ये शब्दों के जादूगर थे। अब क्या बोलेंगे, लोगों को इसकी उत्सुकता रहती थी। उनकी भाव–भंगिमा शब्द के अनुसार होती थी। अटलजी को अगर जानना है तो उनकी कविताओं को पढ़ना पड़ेगा।

अटलजी सभाओं में लोगों का चेहरा देखकर समझ जाते थे कि क्या वे सुनना चाहते हैं? भाषण को रोचक बनाने के लिए कई चुटकुले सुना दिया करते थे। कई कहानियां बता दिया करते थे।

उन्होंने कभी कमर से नीचे वार नहीं किया। अपनी बात कह देनी, जिसको चुभनी चाहिए थी, वह भी ताली बजा देता था। बाद में मालूम पड़ता था कि अरे ये तो मेरे पर कहा गया था। ये एक जादूगरी थी।

अटलजी का भाषा पर जबरदस्त अधिकार था। वे शब्दों को स्वेच्छानुसार नचाने में एक बाजीगर थे। अटलजी के शब्द–सामर्थ्य की चर्चा प्रायः होती है। उनके पास पर्याय, विलोम, समानार्थी, अनेकार्थी शब्द, लोकोक्तियां, कहानियां, चुटकुलों का भंडार था।

संसद में विदेश नीति पर अटल जी ने अपने पहले भाषण से ही सदन का ध्यान आकर्षित किया। सदन में तब अंग्रेजी छाई रहती थी। विदेश नीति में तो अधिकांश भाषण अंग्रेजी में ही होते थे। अटलजी ने हिंदी में प्रभावी भाषण दिया।

अटलजी किनसे प्रभावित रहे?

वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी और पं. जवाहरलाल नेहरू का बड़ा सम्मान करते थे, क्योंकि स्वतंत्रता आंदोलन में नेहरू जेल में रहे थे।

संसद में भी मर्यादा बनाकर रखते थे।

एक बार संसद में, तब हमारी ज्यादा सीटें नहीं होती थीं तो कभी–कभी नंबर आता था बोलने के लिए, बजट अनुदान पर चर्चा हो रही थी। अटलजी ने हिंदी में भाषण दिया। नेहरूजी ने भी जवाब हिंदी में दिया। नेहरू बोले, ''मुझे इसका पता नहीं था कि कोई हिंदी में इतना अच्छा सारगर्भित भाषण कर सकता है!''

उसके बाद रात में राष्ट्रपति भवन में 'एटहोम' था। कम्युनिस्ट देशों से गणमान्य लोगों का दल आया हुआ था। नेहरूजी भी आए थे। अटलजी को भी बुलाया था। वे दूर–दूर रहे कि नेहरूजी नाराज हो गए होंगे। पर नेहरूजी ने बुलाया, ''अटलजी इधर आओ।'' और मेहमान से कहा, ''दिस इज आवर यंग अपोजिशन लीडर। यह देश का भावी कर्णधार है।'' नेहरूजी के ये शब्द थे अटलजी के बारे में।

अटलजी ने भी नेहरूजी को जब श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "सूर्य अस्त हो गया। तारों की छाया में हमें अपना मार्ग ढूंढना है।" तो लोग मुंह में उंगली दबाकर रह गए।

1977 में जब जनता पार्टी की सरकार बनी, तो विभिन्न दलों के लोग उसमें शामिल थे। कहा गया कि जवाहरलाल नेहरू की फोटो हटाओ। अटलजी ने कहा, ''क्यों हटाओ? ऐसा काम करो कि लोग आपकी भी फोटो लगाए।''

अटलजी के व्यक्तित्व के बारे में आप क्या कहेंगे?

समग्रता से देखें तो राम का आदर्श, कृष्ण का सम्मोहन, विवेकानंद की ओजस्विता, बुद्ध का गांभीर्य और चाणक्य की नीति से परिपूर्ण था अटलजी का जीवन। अजातशत्रु ने कभी कमर से नीचे तक वार नहीं किया। कुतर्क से

नहीं तर्क से जवाब देते थे।

अटलजी स्वतंत्र भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय जननेता, अनुभवी पत्रकार, सहृदय कवि, उदारमना नेता, सर्वश्रेष्ठ सांसद, हिंदी गौरव, मंत्रमुग्ध करनेवाला वक्ता, सबको हृदय में बसानेवाला, सबके दिल में बस जाने की अनूठी विशेषता, बच्चों सी सरलता, संतों सी सहजता, निश्छल हंसी और उत्तम व्यवहार के धनी थे। देश के शीर्ष स्थान पर पहुंचे तो देश ने उत्सव मनाया और गए तो देश रोया। भारतीय राजनीति का प्रखरतम राष्ट्रवादी सूरज, प्रिय से लोकप्रिय और लोकप्रिय से सर्वप्रिय, जन–जन के अटल, वाणी में त्राण और त्राण लेकर विरले लोग होते हैं। शालीनता और विनम्रता की प्रतिमूर्ति थे। सर्वधर्म समभाव में विश्वास रखते थे। वे 'सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्' के अनुयायी थे। अटलजी युद्ध के विरुद्ध थे, शांति के पुजारी थे।

अटलजी का आभामंडल प्रखर था। वे अपने निश्छल स्वभाव के कारण सर्वस्वीकार्य थे। वे रागों में राग–भैरव थे। सप्त–सुरों में सहज उनके कंठ का माधुर्य अद्भुत मृदुल था, इसलिए कि उन्हें रबड़ी मिश्रित मावा तथा पेड़े नामक मिठाई बहुत प्रिय थे। वे मीठा बोलते थे। विरोधियों को परास्त करने में ग्वालियर के चूड़े और आगरे के मंगोरे का भी कमाल है।

राजनीति की रपटीली राहों पर अटलजी सरपट दौड़े। वे आधे कवि – आधे राजनेता थे। अटलजी को भारत रत्न से नवाजा गया। कोई भी पद या पुरस्कार अटल जी से बड़ा नहीं है। वे जिस पद पर बैठे उस पद की गरिमा बढ़ गई। उनमें एक अच्छा गुण था कि वे धैर्य से सुनते थे। 'तू आया-मैं गया', ऐसा नहीं करते थे। आप अगर गए हैं और उनके पास समय है तो आपकी पूरी बात सुनेंगे। जब तक आप संतुष्ट नहीं हों, तब तक नहीं जाएंगे और कोशिश करेंगे वो आपकी मदद कर सकें। वे हरदम प्रयत्नशील रहते थे।

वे धैर्यवान थे। वे कम बोलते थे। वे कहा करते थे, बोलने के लिए जिह्वा चाहिए और चुप रहने के लिए विवेक। वे कहते थे- जिसकी नीति ठीक है, जिसकी नीयत ठीक है, उसकी नियति मदद करती है।

सबको साथ लेकर चलने के पक्षधर, कुशल प्रशासक, छोटे से छोटे कार्यकर्ता की व्यथा–कथा मनोयोग से सुनने में सिद्धहस्त, राजनीति के दलदल से निकले कमल पुष्प के समान, हृदय-हृदय को जोड़नेवाले शिल्पी, मानव-मूर्ति को गढ़ना, उसमें प्राण–प्रतिष्ठा करना, वरना मूर्ति पाषाण है, एक कुशल पत्रकार, सांसद ही नहीं सर्वश्रेष्ठ सांसद, विपक्ष के सर्वमान्य नेता, सत्ता के उच्च सिंहासन पर पहुंचकर भी ये कहना, "हे प्रभु मुझे इतनी ऊंचाई मत देना कि गैरों को गले न लगा सकूं, इतनी रुखाई न देना," अद्भुत है।

वे अपने बारे में कहते थे- ''अंतिम यात्रा के अवसर पर विदा की बेला में जब सबका साथ छूटने लगता है, शरीर भी साथ नहीं देता तब आत्मग्लानि से मुक्त यदि हाथ उठाकर यह कह सकता है उसने जीवन में जो कुछ किया सही समझकर किया है किसी को जान–बूझकर चोट पहुंचाने को नहीं, सहज कर्म समझकर किया, तो उसका अस्तित्व सार्थक है, उसका जीवन सफल है, उसी के लिए कहावत बनी है मन चंगा तो कठौती में गंगा।''

अटलजी सबको साथ लेकर चलने के पक्षधर, कुशल प्रशासक, छोटे से छोटे कार्यकर्ता की व्यथा–कथा मनोयोग से सुनने में सिद्धहस्त, राजनीति के दलदल से निकले कमल पुष्प के समान, हृदय–हृदय को जोड़नेवाले शिल्पी थे।

अटलजी से जुड़ी कुछ ऐसी घटनाएं जिनका आप पर प्रभाव पड़ा?

मेरे ऊपर तो सारा प्रभाव खुद उन्हीं का है। घटनाएं बाद में घटी हैं मैं तो पहले से जुड़ गया था उनके साथ। जो अच्छा काम होता उनको खुशी होती, मुझे भी खुशी होती। जो बुरा काम होता, उन्हें दुःख होता।

एक प्रेरक प्रसंग है। अटलजी को बैंगलोर से आना था। 10 बजे प्लेन आती थी। लेने मुझे जाना था। जगदीश माथुरजी उस समय सचिव थे। वे बोले, "क्या कर रहे हो?" मैंने कहा, "कागज-पत्र देख रहा हूं।" वे बोले, "चलो, सिनेमा देखने चलते हैं।" मैंने कहा, "नहीं।" वे बोले, "अरे चलो यार।" मैंने बोला, "10 बजे अटलजी को लेने जाना है, 9 बजे निकलूंगा यहां से।" वे बोले, "चलो, चलो, पिक्चर डेढ़ घंटे की है।" उन्होंने बहुत प्रेशर डाला। मैं चला गया। मेरा भाग्य खराब। एक तो पिक्चर लंबी निकली और फ्लाइट टाइम पर आ गई। जब मैं वहां गया तब तक अटलजी वहां से निकल चुके थे। घर की चाबी मेरे पास थी। जब मैं आया तो अटलजी को टहलता हुआ पाया। मेरी हिम्मत नहीं हुई कि मै अंदर जाऊं। मैं बहुत डर रहा था कि डांटेंगे, पता नहीं क्या कहेंगे? दरवाजा खोला और ब्रीफकेश लिया। अटलजी बोले, "आप कहां चले गए थे?" मैंने कहा, "साहब, सिनेमा देखने चला गया था।" वे बोले, "अरे तो हम भी चलते।" मैंने कहा, "साहब, कुछ ऐसा ही माहौल बना कि चला गया। मैं क्षमा चाहता हूं। आपको दिक्कत हुई।" वे बोले, "अरे नहीं, नहीं।" फिर बोले, "अरे चलो, चलना है एक दूसरी मीटिंग है।" ग्वालियर हाउस में मीटिंग होनी थी। इस तरह की अनेक घटनाएं हैं।

आपने अटलजी पर एक पुस्तक लिखने की योजना बनाई थी, इस बारे में बताएं?

पुस्तक लिखने की तो योजना नहीं थी पर मैंने कुछ पन्ने लिख डाले हैं, उसका संकलन करने की सोच रहा हूं। देखो संभव होता है कि नहीं। उसका नाम होगा 'श्रद्धा, संकल्प और संस्मरण।' ■

कभी झुके नहीं, क्योंकि वो अटल थे : नरेन्द्र मोदी

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को श्रद्धांजलि देने के लिए 20 अगस्त को नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी स्टेडियम में सार्वजनिक सर्वदलीय प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आध्यात्मिक गुरु, राजनीतिक दलों के प्रमुख नेतागण, केंद्रीय मंत्रीगण सहित विभिन्न क्षेत्रों की गणमान्य हस्तियां उपस्थित थीं।

प्रार्थना सभा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अटलजी से जुड़ी कई यादों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि 11 मई को परमाणु परीक्षण अटलजी की दृढ़ता की वजह से हुआ। उसके बाद दुनिया ने भारत पर प्रतिबंध लगा दिया। लेकिन ये अटलजी ही थे, जो 11 मई को परीक्षण के बाद 13 मई को एक बार फिर दुनिया को चुनौती देते हुए भारत की ताकत का अहसास कराया। श्री मोदी ने कहा कि जीवन कितना लंबा हो, यह हमारे हाथ में नहीं है लेकिन जीवन कैसा हो, ये हमारे हाथ में है और अटलजी ने करके दिखाया कि जीवन कैसा हो, क्यों हो, किसके लिए हो और कैसे हो। अटलजी नाम से ही 'अटल' नहीं थे, उनके व्यवहार में भी 'अटल भाव' नजर आता था। प्रधानमंत्री ने कहा कि वाजपेयीजी इतने लंबे समय तक विपक्ष में रहे और फिर भी उन्होंने विचारों की धारा को नहीं खोया, ये बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री जब तक जिए, देश के लिए जिए।

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि मैं खुद को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मेरी अटलजी से मित्रता 65 साल से थी। अटलजी भोजन बहुत अच्छा पकाते थे, वह चाहे खिचड़ी ही सही। मैंने उनसे से बहुत कुछ पाया है। उनकी गैरमौजूदगी में बोलने पर मुझे बहुत दुःख हो रहा है।

प्रार्थना सभा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत ने अटलजी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मुझे अटलजी का सान्निध्य ज्यादा नहीं मिला। तरुण अवस्था में मैं भी उनका भाषण सुनने के लिए जाया करता था। श्री भागवत ने कहा कि अटलजी की सबके साथ मित्रता थी। सार्वजनिक जीवन पर इतनी ऊंचाई पर पहुंचने के बाद भी वे सामान्य जन के प्रति बेहद संवेदनशील थे। अटलजी ने विपरीत हालातों में काम किया। उनके शब्द और उनका जीवन, दोनों में एकरूपता थी।

प्रार्थना सभा में गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री बनने के बाद अटलजी सबको साथ लेकर चले। अटलजी को जानने वाला हर व्यक्ति उनसे प्रभावित है। श्री सिंह ने कहा कि अटलजी के निधन से सभी को पीड़ा हुई है। उनका व्यक्तित्व बहुत महान था।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला ने कहा कि अगर अटलजी को याद रखना है तो इस देश को ऐसा बनाओ, जिसमें प्रेम इतना हो, कि इस देश के सामने दुनिया झुकने आ जाए। दुनिया कहे कि ये देश है जो प्रेम बांटता है। प्रेम को बांटिए, यही सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी हमारी अटल बिहारी वाजपेयी के लिए। मुबारक है, इस धरती को जिसने अटल को पैदा किया। मुझे भी उन्हें समझने का वक्त मिला। अल्लाह से दुआ करता हूं कि उन्हीं के रास्ते पर चलकर इस देश को इतना मजबूत बनाऊं कि कोई इस देश को हिला न सके।

कांग्रेस अध्यक्ष श्री राहुल गांधी के प्रतिनिधि के रूप में मौजूद राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री गुलाम नबी आजाद ने कहा कि यह अद्भुत सभा है, जिसमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश के हर कोने के नेता व दल मौजूद हैं। विचारधारा अलग-अलग है, लेकिन सभी एक हाल में जमा हैं। यही अटलजी का व्यक्तित्व है कि सभी यहां एक साथ है। लोजपा नेता व केंद्रीय मंत्री श्री रामविलास पासवान ने कहा कि मैं बचपन से ही वाजपेयी की भाषण शैली से प्रभावित रहा हूं। जब दिल बड़ा हो तो दल अपने आप बड़ा हो जाता है। योगगुरु बाबा रामदेव ने कहा कि यह शोकसभा नहीं गौरव सभा है। जम्मू-कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री और पीडीपी नेता सुश्री महबूबा मुफ्ती ने कहा कि वाजपेयी जी जम्मू-कश्मीर के लिए मसीहा थे। जमीयते उलेमा ए हिंद के मौलाना मदनी ने कहा कि अटलजी भारत रत्न नहीं अनमोल रत्न थे।

सभा में आए सभी लोगों का आभार जताते हुए भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने अटलजी को अजातशत्रु, राजनेता के साथ संवेदनशील कवि, स्वभावगत पत्रकार, प्रखर वक्ता, जागरुक सांसद बताया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ नेता श्री शरद यादव, संत अवधेशानंद गिरि, लोकसभा उपाध्यक्ष व अन्नाद्रमुक के नेता श्री थंबीदुरई, राज्यसभा के उप सभापति श्री हरिवंश, बसपा के नेता श्री सतीश मिश्र, भाकपा के नेता श्री डी. राजा, तृणमूल कांग्रेस के श्री डेरेक ओ. ब्रायन, अकाली दल की केंद्रीय मंत्री श्रीमती हरसिमरत कौर, शिवसेना नेता श्री सुभाष देसाई, बीजद के श्री शशिभूषण बेहरा, तेलुगु देशम के श्री वाई.एस. चौधरी ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा में राजद, आम आदमी पार्टी, इनेलो, राकांपा, अगप, समेत विभिन्न दलों के नेता उपस्थित थे। ■

मेरे अटल जी

नरेन्द्र मोदी

अटल जी अब नहीं रहे। मन नहीं मानता। अटल जी, मेरी आंखों के सामने हैं, स्थिर हैं। जो हाथ मेरी पीठ पर धौल जमाते थे, जो स्नेह से, मुस्कराते हुए मुझे अंकवार में भर लेते थे, वे स्थिर हैं। अटल जी की ये स्थिरता मुझे झकझोर रही है, अस्थिर कर रही है। एक जलन सी है आंखों में, कुछ कहना है, बहुत कुछ कहना है लेकिन कह नहीं पा रहा। मैं खुद को बार-बार यकीन दिला रहा हूं कि अटल जी अब नहीं हैं, लेकिन ये विचार आते ही खुद को इस विचार से दूर कर रहा हूं। क्या अटल जी वाकई नहीं हैं? नहीं। मैं उनकी आवाज अपने भीतर गूंजते हुए महसूस कर रहा हूं, कैसे कह दूं, कैसे मान लूं, वे अब नहीं हैं।

वे पंचतत्व हैं। वे आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, सबमें व्याप्त हैं, वे अटल हैं, वे अब भी हैं। जब उनसे पहली बार मिला था, उसकी स्मृति ऐसी है जैसे कल की ही बात हो। इतने बड़े नेता, इतने बड़े विद्वान। लगता था जैसे शीशे के उस पार की दुनिया से निकलकर कोई सामने आ गया है। जिसका इतना नाम सुना था, जिसको इतना पढ़ा था, जिससे बिना मिले, इतना कुछ सीखा था, वो मेरे सामने थे। जब पहली बार उनके मुंह से मेरा नाम निकला तो लगा, पाने के लिए बस इतना ही बहुत है। बहुत दिनों तक मेरा नाम लेती हुई उनकी वह आवाज मेरे कानों से टकराती रही। मैं कैसे मान लूं कि वह आवाज अब चली गई है।

कभी सोचा नहीं था, कि अटल जी के बारे में ऐसा लिखने के लिए कलम उठानी पड़ेगी। देश और दुनिया अटल जी को एक स्टेट्समैन, धारा प्रवाह वक्ता, संवेदनशील कवि, विचारवान लेखक, धारदार पत्रकार और विजनरी जननेता के तौर पर जानती है, लेकिन मेरे लिए उनका स्थान इससे भी ऊपर का था। सिर्फ इसलिए नहीं कि मुझे उनके साथ बरसों तक काम करने का अवसर मिला, बल्कि मेरे जीवन, मेरी सोच, मेरे आदर्शों-मूल्यों पर जो छाप उन्होंने छोड़ी, जो विश्वास उन्होंने मुझ पर किया, उसने मुझे गढ़ा है, हर स्थिति में अटल रहना सिखाया है।

हमारे देश में अनेक ऋषि, मुनि, संत आत्माओं ने जन्म लिया है। देश की आज़ादी से लेकर आज तक की विकास यात्रा के लिए भी असंख्य लोगों ने अपना जीवन समर्पित किया है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद लोकतंत्र की रक्षा और 21वीं सदी के सशक्त, सुरक्षित भारत के लिए अटल जी ने जो किया, वह अभूतपूर्व है।

उनके लिए राष्ट्र सर्वोपरि था -बाकी सब का कोई महत्त्व नहीं। इंडिया फर्स्ट –भारत प्रथम, ये मंत्र वाक्य उनका जीवन ध्येय था। पोखरण देश के लिए जरूरी था तो चिंता नहीं की प्रतिबंधों और आलोचनाओं की, क्योंकि देश प्रथम था। सुपर कंप्यूटर नहीं मिले, क्रायोजेनिक इंजन नहीं मिले तो परवाह नहीं, हम खुद बनाएंगे, हम खुद अपने दम पर अपनी प्रतिभा और वैज्ञानिक कुशलता के बल पर असंभव दिखने वाले कार्य संभव कर दिखाएंगे और ऐसा किया भी। दुनिया को चकित किया। सिर्फ एक ताकत उनके भीतर काम करती थी- देश प्रथम की जिद।

काल के कपाल पर लिखने और मिटाने की ताकत, हिम्मत और चुनौतियों के बादलों में विजय का सूरज उगाने का चमत्कार उनके सीने में था, तो इसलिए क्योंकि वह सीना देश प्रथम के लिए धड़कता था। इसलिए हार और जीत उनके मन पर असर नहीं करती थी। सरकार बनी तो भी, सरकार एक वोट से गिरा दी गयी तो भी, उनके स्वरों में पराजय को भी विजय के ऐसे गगनभेदी विश्वास में बदलने की ताकत थी कि जीतने वाला ही हार मान बैठे।

अटल जी कभी लीक पर नहीं चले। उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में नए रास्ते बनाए और तय किए। "आंधियों में भी दीये जलाने" की क्षमता उनमें थी। पूरी बेबाकी से वे जो कुछ भी बोलते थे, सीधा जनमानस के हृदय में उतर जाता था। अपनी बात को कैसे रखना है, कितना कहना है और कितना अनकहा छोड़ देना है, इसमें उन्हें महारत हासिल थी।

राष्ट्र की जो उन्होंने सेवा की, विश्व में मां

भारती के मान-सम्मान को उन्होंने जो बुलंदी दी, इसके लिए उन्हें अनेक सम्मान भी मिले। देशवासियों ने उन्हें भारत रत्न देकर अपना मान भी बढ़ाया। लेकिन वे किसी भी विशेषण, किसी भी सम्मान से ऊपर थे।

जीवन कैसे जीया जाए, राष्ट्र के काम कैसे आया जाए, यह उन्होंने अपने जीवन से दूसरों को सिखाया। वे कहते थे, "हम केवल अपने लिए ना जीएं, औरों के लिए भी जीएं...हम राष्ट्र के लिए अधिकाधिक त्याग करें। अगर भारत की दशा दयनीय है तो दुनिया में हमारा सम्मान नहीं हो सकता, किंतु यदि हम सभी दृष्टियों से सुसंपन्न हैं तो दुनिया हमारा सम्मान करेगी"

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए वे जीवन भर प्रयास करते रहे। वे कहते थे "गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं है, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता।" करोड़ों देशवासियों को इस विवशता से बाहर निकालने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किए। गरीब को अधिकार दिलाने के लिए देश में आधार जैसी व्यवस्था, प्रक्रियाओं का ज्यादा से ज्यादा सरलीकरण, हर गांव तक सड़क, स्वर्णिम चतुर्भुज, देश में विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, राष्ट्र निर्माण के उनके संकल्पों से जुड़ा था।

आज भारत जिस टेक्नोलॉजी के शिखर पर खड़ा है उसकी आधारशिला अटल जी ने ही रखी थी। वे अपने समय से बहुत दूर तक देख सकते थे - स्वप्नद्रष्टा थे लेकिन कर्मवीर भी थे। कवि हृदय, भावुक मन के थे तो पराक्रमी सैनिक मन वाले भी थे। उन्होंने विदेश की यात्राएं कीं। जहां-जहां भी गए, स्थाई मित्र बनाये और भारत के हितों की स्थाई आधारशिला रखते गए। वे भारत की विजय और विकास के स्वर थे।

अटल जी का प्रखर राष्ट्रवाद और राष्ट्र के लिए समर्पण करोड़ों देशवासियों को हमेशा से प्रेरित करता रहा है। राष्ट्रवाद उनके लिए सिर्फ एक नारा नहीं था, बल्कि जीवन शैली थी। वे देश को सिर्फ एक भूखंड, ज़मीन का टुकड़ा भर नहीं मानते थे, बल्कि एक जीवंत, संवेदनशील इकाई के रूप में देखते थे। "भारत जमीन का टुकड़ा नहीं, जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।" यह सिर्फ भाव नहीं, बल्कि उनका संकल्प था, जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन न्योछावर कर दिया। दशकों का सार्वजनिक जीवन उन्होंने अपनी इसी सोच को जीने में, धरातल पर उतारने में लगा दिया। आपातकाल ने हमारे लोकतंत्र पर जो दाग लगाया था उसको मिटाने के लिए अटल जी के प्रयास को देश हमेशा याद रखेगा।

राष्ट्रभक्ति की भावना, जनसेवा की प्रेरणा उनके नाम के ही अनुकूल अटल रही। भारत उनके मन में रहा, भारतीयता तन में। उन्होंने देश की जनता को ही अपना आराध्य माना। भारत के कण-कण, कंकर-कंकर, भारत की बूंद-बूंद को, पवित्र और पूजनीय माना।

जितना सम्मान, जितनी ऊंचाई अटल जी को मिली उतना ही अधिक वह ज़मीन से जुड़ते गए। अपनी सफलता को कभी भी उन्होंने अपने मस्तिष्क पर प्रभावी नहीं होने दिया। प्रभु से यश, कीर्ति की कामना अनेक व्यक्ति करते हैं, लेकिन ये अटल जी ही थे जिन्होंने कहा,

"हे प्रभु! मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना।

गैरों को गले ना लगा सकूं, इतनी रुखाई कभी मत देना"

अपने देशवासियों से इतनी सहजता और सरलता से जुड़े रहने की यह कामना ही उनको सामाजिक जीवन के एक अलग पायदान पर खड़ा करती है।

वे पीड़ा सहते थे, वेदना को चुपचाप अपने भीतर समाये रहते थे, पर सबको अमृत देते रहे- जीवन भर। जब उन्हें कष्ट हुआ तो कहने लगे- "देह धरण को दंड है, सब काहू को होये, ज्ञानी भुगते ज्ञान से मूरख भुगते रोए।" उन्होंने ज्ञान मार्ग से अत्यंत गहरी वेदनाएं भी सहन कीं और वीतरागी भाव से विदा ले गए।

यदि भारत उनके रोम-रोम में था तो विश्व की वेदना उनके मर्म को भेदती थी। इसी वजह से हिरोशिमा जैसी कविताओं का जन्म हुआ। वे विश्व नायक थे। मां भारती के सच्चे वैश्विक नायक। भारत की सीमाओं के परे भारत की कीर्ति और करुणा का संदेश स्थापित करने वाले आधुनिक बुद्ध।

कुछ वर्ष पहले लोकसभा में जब उन्हें वर्ष के सर्वश्रेष्ठ सांसद के सम्मान से सम्मानित किया गया था तब उन्होंने कहा था, "यह देश बड़ा अद्भुत है, अनूठा है। किसी भी पत्थर को सिंदूर लगाकर अभिवादन किया जा रहा है, अभिनंदन किया जा सकता है।"

देश के गरीब, वंचित, शोषित के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए अटलजी जीवन भर प्रयास करते रहे। वे कहते थे "गरीबी, दरिद्रता गरिमा का विषय नहीं है, बल्कि यह विवशता है, मजबूरी है और विवशता का नाम संतोष नहीं हो सकता।" करोड़ों देशवासियों को इस विवशता से बाहर निकालने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास किए। गरीब को अधिकार दिलाने के लिए देश में आधार जैसी व्यवस्था, प्रक्रियाओं का ज्यादा से ज्यादा सरलीकरण, हर गांव तक सड़क, स्वर्णिम चतुर्भुज, देश में विश्व स्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर, राष्ट्र निर्माण के उनके संकल्पों से जुड़ा था।

अपने पुरुषार्थ को, अपनी कर्तव्यनिष्ठा को राष्ट्र के लिए समर्पित करना उनके व्यक्तित्व की महानता को प्रतिबिंबित करता है। यही सवा सौ करोड़ देशवासियों के लिए उनका सबसे बड़ा और प्रखर संदेश है। देश के साधनों, संसाधनों पर पूरा भरोसा करते हुए, हमें अब अटल जी के सपनों को पूरा करना है, उनके सपनों का भारत बनाना है।

नए भारत का यही संकल्प, यही भाव लिए मैं अपनी तरफ से और सवा सौ करोड़ देशवासियों की तरफ से अटल जी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, उन्हें नमन करता हूं। ■

(लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं)

असंभव की किताबों पर जय का चक्रवर्ती निनाद करने वाले मानवता के स्वयंसेवक

अमित शाह

अटल बिहारी वाजपेयी इस देश की राष्ट्रीयता के प्राणतत्व थे। भारत क्या है, अगर इसे एक पंक्ति में समझना हो तो अटल बिहारी वाजपेयी का नाम ही काफी है। वे लगभग आधी शताब्दी तक हमारी संसदीय प्रणाली के बेजोड़ नेता रहे। अपनी वक्तृत्व क्षमता से वे लोगों के दिलो में बसते थे। उनकी वाणी पर सरस्वती विराजमान थी। वे उदारता के प्रणेता थे।

समता समरसता की अलख जगाने वाले साधक थे। वे एक ऐसे युग मनीषी थे, जिनके हाथों में काल के कपाल पर लिखने, मिटाने का अमरत्व था। पांच दशक के लंबे संसदीय जीवन मे देश की राजनीति ने इस तपस्वी को सदैव पलकों पर बिठाए रखा। एक ऐसा तपस्वी जो आजीवन राग-अनुराग और लोभ-द्वेष से दूर राजनीति को मानव सेवा की प्रयोगशाला सिद्ध करने में लगा रहा।

अटल जी का जीवन आदर्शमयी प्रतिभा का ऐसा इंद्रधनुष था जिसके हर रंग में मौलिकता की छाप थी। पत्रकार का जीवन जिया तो उसके शीर्षस्थ प्रतिमानों के हर खांचे पर कुंदन की तरह खरे उतरे। राष्ट्रधर्म, वीर अर्जुन, पांचजन्य जैसे पत्रों को उनकी प्रामाणिकता और लोकप्रियता के शिखर तक पहुंचाया। कवि की भूमिका अपनाई तो उदारमना चेतना की समस्त उपमाएं बौनी कर दीं। अंतःकरण से गाया। श्वासों से निभाया। कभी कुछ मांगा भी तो बस इतना-

"मेरे प्रभु!
मुझे इतनी ऊंचाई कभी मत देना
गैरों को गले न लगा सकूं
इतनी रुखाई कभी मत देना।"

उनके भीतर का राजनेता हमेशा शोषितों और वंचितों की पीड़ा से तड़पता रहा। उनके राजनीतिक जीवन की बस एक ही दृष्टि रही कि एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकें जो भूख, भय, निरक्षरता और अभाव से मुक्त हो।

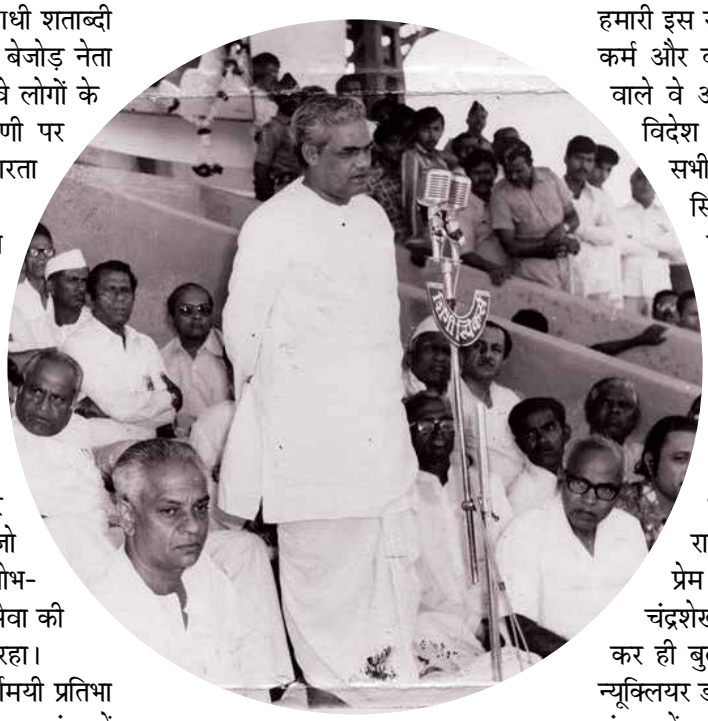

वे इसी आदर्श के लिए जिए। इसी की खातिर मरे। जीवन मे न कुछ जोड़ा, न घटाया। सिर्फ दिया। वो भी निस्पृह हाथों से। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के आदर्शों की फलित भूमि पर उन्होंने राजनीति के जो अजेय सोपान गढ़े वो आज ऐसी लकीर बन चुके हैं, जिन्हें पार करने का साहस स्वयं काल के पास भी नही।

देश के सवा सौ करोड़ से ज्यादा लोगों के 'अटल जी' यानी अटल बिहारी वाजपेयी हमारी इस राजनीति से कहीं ऊपर थे। मन, कर्म और वचन से राष्ट्रवाद का व्रत लेने वाले वे अकेले राजनेता थे। देश हो या विदेश अपनी पार्टी हो या विरोधी दल सभी उनकी प्रतिभा के कायल थे। सिर्फ़ बीसवीं सदी के ही नहीं, वे इक्कीसवीं सदी के भी सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय वक्ता रहे।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने अटल बिहारी वाजपेयी में भारत का भविष्य देखा था। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि 'वे एक दिन भारत का नेतृत्व करेंगे। डॉ. राममनोहर लोहिया उनके हिंदी प्रेम के प्रशंसक थे। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर उन्हें संसद में 'गुरुदेव' कह कर ही बुलाते थे। डॉ. मनमोहन सिंह ने न्यूक्लियर डील के दौरान 5 मार्च 2008 को संसद में उन्हें राजनीति का भीष्म पितामह कहा था। इस देश में ऐसे गिनती के लोग होंगे, जिन्हें जनसभा से लेकर लोकसभा तक लोग निःशब्द होकर सुनते थे।

ग्वालियर के शिंदे की छावनी से 25

दिसंबर 1924 को शुरू हुआ अटल बिहारी वाजपेयी का राजनीतिक सफर, पत्रकार संपादक, कवि, राजनेता, लोकप्रिय वक्ता से होता भारत के प्रधानमंत्री पद तक पहुंचा था। उनकी यह यात्रा बेहद ही रोचक और अविस्मरणीय रही। तीन बार देश के प्रधानमंत्री बनने वाले अटल बिहारी वाजपेयी सही मायनों में पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे। यानी अब तक बने प्रधानमंत्रियों से इतर न तो वे कभी कांग्रेस में रहे, न नही कांग्रेस के समर्थन से रहे। वो शुद्ध अर्थों में कांग्रेस विरोधी राजनीति की धुरी थे। पंडित नेहरु के बाद वे अकेले ऐसे प्रधानमंत्री थे जिन्होंने लगातार तीन जनादेशों के बाद प्रधानमंत्री का पद पाया।

भारतीय राजनीति के इस सदाबहार नायक ने विज्ञान से एम.ए. करने के बाद पत्रकारिता की और तीन समाचार पत्रों 'राष्ट्रधर्म', 'पांचजन्य' और 'वीर अर्जुन' का संपादन भी किया। वाजपेयी जी देश के एक मात्र सांसद थे, जिन्होंने देश की छह अलग-अलग सीटों से चुनाव जीता था। हाजिर जवाब वाजपेयी पहले प्रधानमंत्री थे, जो प्रधानमंत्री बनने से पहले लंबे समय तक नेता विरोधी दल रहे। भारतीय राजनीति के विस्तृत कैनवास को अटल जी ने सूक्ष्मता और व्यापकता से समझा। वे उसके हर रंग को पहचानते थे। इसलिए प्रभावी रूप से उसे बिखेरते थे। वे ऐसे वक्ता थे जिनके पास इस देश के सवा सौ करोड़ श्रोताओं में से सबके लिए कुछ न कुछ मौलिक था। इसीलिए गए साठ वर्षों से देश उनकी ओर खींचता चला गया।

अटल जी के शासनकाल में भारत दुनिया के उन ताकतवर देशों में शुमार हुआ, जिनका सभी लोहा मानने लगे। पोखरण में परमाणु विस्फोटों की श्रृंखला से हम दुनिया के सामने सीना तान सके। प्रधानमंत्री रहते उन्होंने 'भय और भूखमुक्त' भारत का सपना देखा था। बतौर विदेशमंत्री उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिंदी को गुंजाया था। अटल जी जीवन भर इस घटना को अपना सबसे सुखद क्षण मानते रहे। जिनेवा के उस अवसर को आज भी भारतीय कूटनीति की मिसाल कहा जाता है, जब भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करते हुए आतंकवाद के सवाल पर वाजपेयी जी ने पाकिस्तान को अलग-थलग कर दिया था। तब देश के प्रधानमंत्री पी.वी नरसिंह राव थे। ये उनकी ही सोच थी जो संकीर्णताओं की दहलीज पारकर चमकती थी और सीधा विश्व चेतना को संबोधित करती थी कि मन हार कर मैदान नहीं जीते जाते। न मैदान जीतने से मन जीते जाते हैं। ये बात उन्होंने तब कही थी जब 14 साल बाद भारतीय टीम पाकिस्तान के ऐतिहासिक क्रिकेट दौरे पर गई थी।

अटल जी के शासनकाल में भारत दुनिया के उन ताकतवर देशों में शुमार हुआ, जिनका सभी लोहा मानने लगे। पोखरण में परमाणु विस्फोटों की श्रृंखला से हम दुनिया के सामने सीना तान सके। प्रधानमंत्री रहते उन्होंने 'भय और भूखमुक्त' भारत का सपना देखा था। बतौर विदेशमंत्री उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिंदी को गुंजाया था। अटल जी जीवन भर इस घटना को अपना सबसे सुखद क्षण मानते रहे। जिनेवा के उस अवसर को आज भी भारतीय कूटनीति की मिसाल कहा जाता है, जब भारतीय प्रतिनिधि मंडल का नेतृत्व करते हुए आतंकवाद के सवाल पर वाजपेयी जी ने पाकिस्तान को अलग-थलग कर दिया था।

वे देश के चारों कोनों को जोड़ने वाली स्वर्णिम चतुर्भुज जैसी अविस्मरणीय योजना के शिल्पी थे। नदियों के एकीकरण जैसे कालजयी स्वप्न के द्रष्टा थे। मानव के रूप में महामानव थे। असंभव की किताबों पर जय का चक्रवर्ती निनाद करने वाले मानवता के स्वयंसेवक थे। उनकी स्मृतियों को नमन। अटल जी को कोटि-कोटि नमन। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं)

अटल बिहारी वाजपेयी भारत माता के सपूत

रामलाल

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारत माता के एक ऐसे सपूत थे, जिन्होंने स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात् भी अपना जीवन देश और देशवासियों के उत्थान एवं कल्याण हेतु जिया तथा जिनकी वाणी से असाधारण शब्दों को सुनकर आम जन उल्लसित होते रहे और जिनके कार्यों से देश का मस्तक ऊंचा हुआ। मध्य प्रदेश के ग्वालियर में एक मध्यवर्गीय परिवार में 25 दिसंबर, 1924 को अटल जी का जन्म हुआ। पुत्र प्राप्ति से हर्षित पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी को तब शायद ही अनुमान रहा होगा कि आगे चलकर उनका यह पुत्र विश्वपटल पर भारत का नाम रोशन करेगा।

अटल जी ने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज - जो अब लक्ष्मीबाई कॉलेज कहलाता है - में तथा कानपुर उ. प्र. के डी.ए.वी. कॉलेज में शिक्षा ग्रहण की और राजनीति विज्ञान में एम. ए.की उपाधि प्राप्त की। सन् 1993 मे कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा दर्शन शास्त्र में पी.एच डी की मानद उपाधि से सम्मानित किए गए।

अटल जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे, भारतीय स्वातंत्र्य-आंदोलन में सक्रिय योगदान कर 1942 आंदोलन में वो जेल गए तथा सन् 1951 में गठित राजनैतिक दल 'भारतीय जनसंघ' गठन हुआ जिसके अटल जी संस्थापक सदस्य थे। भारत के बहुदलीय लोकतंत्र में अटल जी ऐसे राजनेता थे, जो प्रायः सभी दलों को स्वीकार्य रहे, इनके व्यक्तित्व विशेषता के कारण ये 16 मई, 1996 से 31 मई, 1996 तथा 1998-99 और 13 अक्तूबर, 1990 से मई, 2004 तक तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे। भारत की संस्कृति, सभ्यता, राजधर्म, राजनीति और विदेश नीति की इनको गहरी समझ थी, बदलते राजनैतिक पटल पर गठबंधन सरकार को सफलतापूर्वक बनाने, चलाने और देश को विश्व में एक शक्तिशाली गणतंत्र के रूप में प्रस्तुत कर सकने की करामात इन जैसे करिश्माई नेता के बूते की ही बात थी। प्रधानमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल में जहां इन्होंने विभिन्न देशों से संबंध सुधारने हेतु अभूतपूर्व कदम उठाए वहीं अंतरराष्ट्रीय दवाबों के बावजूद गहरी कूटनीति तथा दृढ़ इच्छाशक्ति का प्रदर्शन करते हुए पोखरण में परमाणु विस्फोट किए तथा कारगिल-युद्ध जीता।

राजनीति में दिग्गज राजनेता, विदेश नीति में संसार भर में समादृत कूटनीतिज्ञ, लोकप्रिय जननायक और कुशल प्रशासक होने के साथ-साथ ये एक अत्यंत सक्षम और संवेदनशील कवि, लेखक और पत्रकार भी थे। विभिन्न संसदीय प्रतिनिधिमंडलों के सदस्य और विदेश मंत्री तथा प्रधानमंत्री के रूप में इन्होंने विश्व के अनेक देशों की यात्राएं कीं और भारतीय कूटनीति तथा विश्वबंधुत्व का ध्वज लहराया। राष्ट्रधर्म (मासिक), पाञ्चजन्य (साप्ताहिक), स्वदेश (दैनिक) और वीर अर्जुन (दैनिक), पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे। विभिन्न विषयों पर अटल जी द्वारा रचित अनेक पुस्तकें और कविता संग्रह प्रकाशित हैं, देश की आर्थिक उन्नति, वंचितों के उत्थान और महिलाओं तथा बच्चों के कल्याण की चिंता उन्हें हरदम रहती थी, राष्ट्र सेवा हेतु राष्ट्रपति द्वारा पद्म विभूषण से अलंकृत श्री वाजपेयी 1994 में लोकमान्य तिलक पुरस्कार और सर्वोत्तम सांसद के भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत पुरस्कार, 2015 में सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न सहित अनेक पुरस्कारों, सम्मानों से विभूषित थे। और आज श्रद्धेय अटल जी हमारे मध्य नही रहे..

मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
ज़िन्दगी सिलसिला, आज कल की नहीं।
मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूं,
लौटकर आऊंगा, कूच से क्यों डरूं?

उनकी इन्ही पंक्तियों में भारतीय राजनीति के जननायक श्रद्धेय अटल जी को अंतिम प्रणाम। ■

(लेखक भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) हैं)

भविष्य की राह दिखाने वाला अटल युग

अरुण जेटली

अटल जी के निधन को तमाम लोग एक युग का अंत बता रहे हैं, लेकिन मेरे ख्याल से यह उस युग की निरंतरता ही है जिसके वह प्रवर्तक रहे। उनकी राजनीतिक यात्रा की शुरुआत छात्र जीवन में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने से हुई। फिर वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जुड़े। उसके बाद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आह्वान पर भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक रहे। जनसंघ के शुरुआती दौर में वह 'कश्मीर सत्याग्रह' से जुड़े, जिसका मकसद राज्य में भारतीय नागरिकों पर लगे तमाम प्रतिबंधों को हटवाना था। डॉ. मुखर्जी के साथ ही वह भी लियाकत-नेहरू समझौते के घोर विरोधी थे। 1957 में एक युवा सांसद के तौर पर तिब्बत संकट और फिर 1962 में चीन से मिली पराजय पर संसद में उनके भाषणों ने सभी को प्रभावित किया। युवावस्था में ही वह जनसंघ का प्रमुख चेहरा बन गए। उन्होंने देश भर का दौरा किया और करिश्माई वक्ता की छवि हासिल की। प्रवास के दौरान अधिकांश मौकों पर वह कार्यकर्ताओं के घर पर ही ठहरते थे। यह उस दौर की बात है जब एक नई पार्टी खड़ी हो रही थी। 1962 में जब चीन से मिली पराजय के बाद कांग्रेस से मोहभंग हो रहा था। तब डॉ. लोहिया ने 'कांग्रेस हटाओ, देश बचाओ' के अभियान का बिगुल बजाया और उपचुनावों में पं. दीनदयाल उपाध्याय और आचार्य कृपलानी के साथ सीटों पर साझेदारी को लेकर बात शुरू की। अपनी राजनीतिक टीम के साथ दीनदयाल जी एक नई पार्टी का सांगठनिक ढांचा खड़ा करने में जुटे थे। उनके साथियों में अधिकांश उम्र के तीसरे दशक में दाखिल युवा ही थे। 1967 में जनसंघ के कई सांसद चुने गए। दिल्ली में उसे पूर्ण बहुमत मिला। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पंजाब में पार्टी अपनी ठीकठाक मौजूदगी दर्ज कराने में सफल रही। दीनदयाल जी के असामयिक निधन से जनसंघ के नेतृत्व की बागडोर अटल जी के हाथ आ गई। पार्टी के मूल सिद्धांतों से समझौते किए बिना उन्होंने दूसरे दलों के साथ तालमेल किया और राष्ट्रीय स्तर पर जनसंघ के सम्मानित एवं स्वीकार्य चेहरा बन गए। वह दलगत हितों से ऊपर उठने में हिचकते नहीं थे और 1971 के युद्ध में इंदिरा सरकार को उनका समर्थन इसकी मिसाल थी।

अटल जी के नेतृत्व में जनसंघ के सहयोग से 1974 में जयप्रकाश नारायण के आंदोलन को बहुत मजबूती मिली। आपातकाल का विरोध और लोकतंत्र की पुनर्स्थापना को लेकर उनके नेतृत्व में जनसंघ ने लड़ाई लड़ी। जनता सरकार में कुछ समय के लिए सत्ता में

भागीदारी भी मिली, लेकिन वह प्रयोग विफल हुआ। फिर 1980 में जनसंघ का भाजपा के रूप में पुनर्जन्म हुआ और उद्घाटन सत्र में ही उत्साही कार्यकर्ताओं ने नारा दिया- 'प्रधानमंत्री की अगली बारी, अटल बिहारी, अटल बिहारी।' अपने शुरुआती दौर में भाजपा राजनीतिक छुआछूत की शिकार थी। 1984 के चुनाव में उसकी शुरुआत ही खराब रही। इससे हतोत्साहित हुए बिना अटल जी और आडवाणी जी की जोड़ी भाजपा के विस्तार को लेकर दृढ़संकल्पित रही। नतीजे में 1989 के चुनाव में भाजपा को लोकसभा की 89 सीटें मिलीं, जिनका दायरा 1991 में बढ़कर 121 हो गया। फिर यह आंकड़ा 1996 में 166 और 1998 में बढ़कर 183 तक पहुंच गया। अलग-थलग पड़ी भाजपा भारतीय राजनीति की मुख्यधारा की पार्टी बन गई थी। 1998 और 1999 में अटल जी के नेतृत्व में पार्टी को शानदार जीत मिली और प्रधानमंत्री के रूप में वह बेहद सफल रहे। उन्होंने भारतीय राजनीति में एक पार्टी के वर्चस्व को खत्म किया। भाजपा ने अपने सामाजिक एवं भौगोलिक दायरे में विस्तार किया।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में अटल जी ने एक पार्टी के दबदबे वाली स्थिति में लोगों को राजनीतिक विकल्प दिया। आडवाणी जी के साथ मिलकर उन्होंने केंद्रीय और राज्य स्तर पर दूसरी पांत के नेताओं की फौज तैयार की। विचारों को लेकर वह बहुत खुले हुए थे। हमेशा राष्ट्र हितों को सर्वोपरि रखा। साथियों और विरोधियों के साथ सहज रहे और कभी भी बेवजह विवाद में नहीं फंसे। चूंकि वह निजी हमले के बजाय मुद्दों पर ही बात करते थे इसलिए कोई उनसे बैर भी नहीं रखता था। शब्दों के वह ऐसे जादूगर थे कि अपनी वक्तृत्व कला से किसी भी मुश्किल हालात को मात दे सकते थे। संसद में जब वह बोलते तो चप्पा-चप्पा शांत हो जाता। रैलियों में उन्हें सुनने के लिए लोग घंटों पहले पहुंच जाया करते थे। हाजिरजवाबी में भी उनका कोई सानी नहीं था। वह मुश्किल चीजों को भी आसानी से समझा देते थे।

समय-समय पर गठबंधन में उनसे अलग-अलग साथी जुड़ते रहे। केसी पंत और रामकृष्ण हेगड़े जैसे विरोधियों को भी उन्होंने साथ लिया। 1998 में परमाणु परीक्षण उनकी सरकार का निर्णायक क्षण था। पाकिस्तान के साथ शांति बहाली के भी प्रयास किए। कारगिल जैसी साजिश हुई तो उसका मुंहतोड़ जवाब भी दिया। आर्थिक मोर्चे पर भी वह बड़े सुधारक रहे। राष्ट्रीय राजमार्ग, ग्रामीण सड़कें, बेहतर बुनियादी ढांचा और नई व्यावहारिक दूरसंचार नीति और नया विद्युत कानून इसके प्रमुख उदाहरण हैं। सरकार के भीतर किसी भी चर्चा में वह हमेशा उदार आर्थिक दृष्टिकोण के हिमायती रहे। बदलते वैश्विक परिदृश्य में उन्होंने विदेश नीति को भी सही दिशा में मोड़ा। प्रधानमंत्री के रूप में भी वह अपने मातहत मंत्रियों और नौकरशाहों पर कभी सख्त नहीं रहे। विनम्र, लेकिन दृढ़ लहजे में पने मातहतों से वह अपनी बात मनवा लेते थे। उनकी कैबिनेट बैठकें घंटों तक चलती थीं। वह हर एक मुद्दे पर चर्चा कराते और फिर विरोधाभासी विचारों को गुण-दोष के आधार पर परखते। खान-पान के भी बड़े शौकीन थे। उनके भीतर मौजूद कवि ने उन्हें स्वप्नदर्शी बनाया। उनकी कविताओं की तमाम पंक्तियां उनके मिजाज का ही प्रतिबिंब हैं।

आपातकाल के दौरान कमर में तकलीफ के उपचार के लिए उन्हें एम्स ले जाया गया। डॉक्टर ने पूछा कि क्या आप झुक गए थे? दर्द में भी उनका हास्यबोध कायम था। उन्होंने आपातकाल के संदर्भ में जवाब दिया, 'झुकना तो सीखा नहीं डॉक्टर साहब, मुड़ गए होंगे।' इसी विचार से उन्होंने अस्पताल बेड पर ही 'टूट सकते हैं, मगर झुक नहीं सकते' जैसी आपातकाल विरोधी कविता लिखी जो उस दौर में बहुत लोकप्रिय हुई। अटल जी सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक थे। उनकी राजनीतिक शैली उदार थी। वह आलोचना को स्वीकार करते थे। संसदीय लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में पगे हुए होने के कारण आम सहमति की कद्र करते थे। किसी से कोई द्वेष नहीं रखते थे। सहमति रखने वालों से भी संवाद करते थे। विपक्ष में रहे हों या सत्ता में उनका रवैया कभी नहीं बदला। वह ऐसे प्रतिष्ठित ओजस्वी वक्ता थे, जिनकी हालिया इतिहास में मिसाल मिलना मुमकिन नहीं। साख उनकी सबसे बड़ी थाती थी। नेहरूवादी कांग्रेस के दबदबे वाले दौर में उन्होंने ऐसी वैकल्पिक राजनीतिक धारा बनाई जो न केवल कांग्रेस का विकल्प बनी, बल्कि उससे कहीं आगे निकल गई। धैर्य के मामले में अटल जी मैराथन धावक थे। अटल जी भले ही इस दुनिया से विदा हो गए हों, लेकिन उन्होंने जिस दौर की बुनियाद रखी वह आगे और समृद्ध होता जाएगा। ■

(लेखक केंद्रीय वित्त मंत्री हैं) दैनिक जागरण से साभार

आपातकाल के दौरान कमर में तकलीफ के उपचार के लिए उन्हें एम्स ले जाया गया। डॉक्टर ने पूछा कि क्या आप झुक गए थे? दर्द में भी उनका हास्यबोध कायम था। उन्होंने आपातकाल के संदर्भ में जवाब दिया, 'झुकना तो सीखा नहीं डॉक्टर साहब, मुड़ गए होंगे।' इसी विचार से उन्होंने अस्पताल बेड पर ही 'टूट सकते हैं, मगर झुक नहीं सकते' जैसी आपातकाल विरोधी कविता लिखी जो उस दौर में बहुत लोकप्रिय हुई। अटल जी सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक थे। उनकी राजनीतिक शैली उदार थी। वह आलोचना को स्वीकार करते थे। संसदीय लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में पगे हुए होने के कारण आम सहमति की कद्र करते थे।

शत नमन तुझे है बार-बार

प्रभात झा

वर्तमान भारतीय राजनीति में सत्ता या विपक्ष में रहते हुये जन श्रद्धा का केन्द्र बने रहना उतना ही दुष्कर है, जितना कि आज भी चांद पर पहुंचना। अटल बिहारी वाजपेयी 12 साल से राजनीति से दूर रहे, पर कोई दिन ऐसा नहीं गया होगा जब उनकी चर्चाएं करोड़ों घरों में नित नहीं होती रही होंगी। आजादी के पहले के नेताओं द्वारा समाज की जो कल्पना हुआ करती थी उसे बनाये रखने का काम जो अटल जी ने किया, वो आज से पहले देश के किसी भी नेता ने नहीं किया।

संसद में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के समक्ष संसद में अपनी वाणी से सदन के सदस्यों के दिल को स्पंदित करने वाले अटल बिहारी वाजपेयी जी के बारे में नेहरू जी ने कहा था कि ''मैं इस युवक में भारत का भविष्य देख रहा हूं।'' सच में नेहरू जी ने उन्हें जो कुछ देखा उसे अटल जी ने अपने कर्म से उस ऊंचाई तक पहुंच कर जनता के सपनों को साकार किया। अटल जी भारत के वो व्यक्तित्व रहे जो विपक्ष में रहते हुये भी देश उनके बारे में यह सोचता रहा कि आज नहीं कल यह व्यक्ति भारत का प्रधानमंत्री बनेगा। राजनीति में जनता यदि नेता के बारे में सोचने लगे कि सच में इस व्यक्ति को प्रधानमंत्री होना चाहिये तो उस व्यक्ति का जीवन स्वयं सार्थक हो जाता है। अटल जी ऐसे ही शख्स थे। अटल जी नैसार्गिक रूप से नेता बने। नेता बनने के लिये उन्होंने कभी कोई जोड़-तोड़ नहीं की।

हम ग्वालियर के लोग अटल जी को बहुत करीब से जानते रहे हैं। हम उनके पासंग भी नहीं हैं, पर ग्वालियर के होने के नाते स्वतः हमें गर्व महसूस होता है कि हम उस ग्वालियर के हैं, जहां अटल बिहारी वाजपेयी जैसे शख्स पैदा हुये।

अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कभी अपने बारे में नहीं सोचा, वे सदैव देश के बारे में सोचते रहे। आजादी के बाद के सात दशकों के वे ऐसे आखिरी नेता रहे जिनके बारे में हर नागरिक कहीं न कहीं श्रद्धा भाव रखता रहा। वे भारत के आखिरी ऐसे नेता रहे, जिनको सुनने के लिये लोग अपने आप आते थे लोगों को लाने का कोई प्रयत्न नहीं करना पड़ता था। भारत की वर्षों की राजनीति में अपनी वाणी से भारत के ही नहीं विश्व के लोगों के मन में अपना घर बना लेना सामान्य बात नहीं है। उनकी वाणी का महत्व इसलिये बना, क्योंकि उनकी वाणी और चरित्र में दूरी नहीं हुआ करती थी। वो जैसा बोलते थे वैसी ही जिन्दगी जीते थे। ''अटल जी क्या बोलेंगे'' इस पर देश इंतजार करता था। यदि किसी व्यक्ति की वाणी का देश की जनता सुनने का इंतजार करे, सच में वो व्यक्तित्व अजेय होता है। अगर हम उन्हें सरस्वती पुत्र कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। अपने लिये तो सब जीते है, देश के लिये हर पल जीने वाले व्यक्ति बहुत कम होते है।

''नेता'' शब्द का जब सृष्टि में निर्माण हुआ होगा, उस समय जो कल्पना की गई होगी उसका यदि भारत की जमीन पर शत-प्रतिशत उतारने का और अपने जीवन शैली से जिसने जीने की कोशिश की उस व्यक्ति का नाम अटल बिहारी वाजपेयी है। वो देश के जन गण मन को जीतते रहे। उन्होंने भारत की राजनीति में एक ऐसी लकीर खींची कि यदि आप भारत माता की सेवा करना चाहते है, तो सिर्फ सत्ता में रहकर ही नहीं, बल्कि विपक्ष में रहकर भी एक राष्ट्र के प्रहरी के रूप में कर सकते हैं। विपक्ष में रहकर भारतीय मनमानस में श्रद्धा की फसल उगाना सामान्य घटना नहीं है।

अटल जी नैतिकता का नाम है। अटल जी प्रामाणिकता का नाम है। अटल जी राजनैतिक सच का नाम है। अटल जी विरोधियों के मन को जीतने का नाम है। अटल जी विचार का नाम है। अटल जी प्रतिबद्धता का नाम है। अटल जी निराशा में आशा की किरण जगाने वाले व्यक्तित्व का नाम है। अटल जी देश की राजनीति में दूसरे दलों को प्रतिद्वंदी मानते थे विरोधी नहीं। अटल जी जब संसद सदस्य नहीं रहे, तब भी निराश नहीं हुये और वे जब प्रधानमंत्री बने तब भी कभी भी वे बौराये नहीं। उनके जीवन में संतुलित सामाजिक व्यवहार ने देश में उनकी स्वीकार्यता बढ़ायी। अपने राष्ट्रीयता के व्यवहार से उन्होंने संसद में वर्षों रहने के बाद सभी लोगों के मन मंदिर में बसे रहे।

दुनिया का सबसे कठिन काम होता है कि प्रतिद्वंदियों के मन में श्रद्धा उपजा लेना। वे भारत के अकेले ऐसे राजनीतिज्ञ रहे, जिन्होंने विरोध में रहकर भी सत्ताधारियों के मन में श्रद्धा का भाव पैदा किया। ऐसे लोग धरा पर विरले होते हैं। तेरह दिन, तेरह महीने और उनके पांच साल के कार्यकाल को कौन भूल सकता है। भारत में गांव-गांव में बनी सड़कें आज भी अटल जी को याद कर रहीं है। कारगिल का युद्ध अटल जी की फौलादी प्रवृत्ति को भी उजागर करता है। परमाणु विस्फोट कर विश्व को स्तब्ध कर देने का अनूठा कार्य भारत में अगर किसी ने किया तो उस व्यक्ति का नाम है अटल बिहारी वाजपेयी। दल में आने वाली पीढ़ी का निर्माण और भारत में प्रतिभा शक्तियों को प्रतिष्ठित करने का अद्वितीय कार्य अटल जी ने किया। वे राजनीति के त्रिवेणी थे। वे पत्रकार रहे और राजनीतिज्ञ भी रहे। वे विचारों के टकराहट में कभी टूटे नहीं और कभी भूले नहीं कि मातृवंदना ही उनकी पूजा थी। राष्ट्रभाषा उनका जीवन था और समाज सेवा उनका कर्म रहा।

हम लोग सौभाग्यशाली रहे कि अटल जी

के साथ हमें काम करने का सुनहरा अवसर मिला। वे जन्मे जरूर ग्वालियर में थे, पर भारत का कोई कोना नहीं था जो उन पर गर्व नहीं करता था। कश्मीर से कन्याकुमारी तक उन्होंने अपने अथक वैचारिक परिश्रम से अद्भुत पहचान बनाई थी। वे प्रतिभा को मरने नहीं देते थे, वे प्रतिभा को पलायन नहीं करने देते थे। वे आने वाले कल में वर्तमान को सजाकर और संवार कर रखने में विश्वास रखते थे। उन्होंने कभी अपने को स्थापित करने के लिये वो कार्य नहीं किया, जो राजनीति में टीका–टिप्पणी की ओर ले जाता हो। वे सच के हिमायती थे। उन्होंने

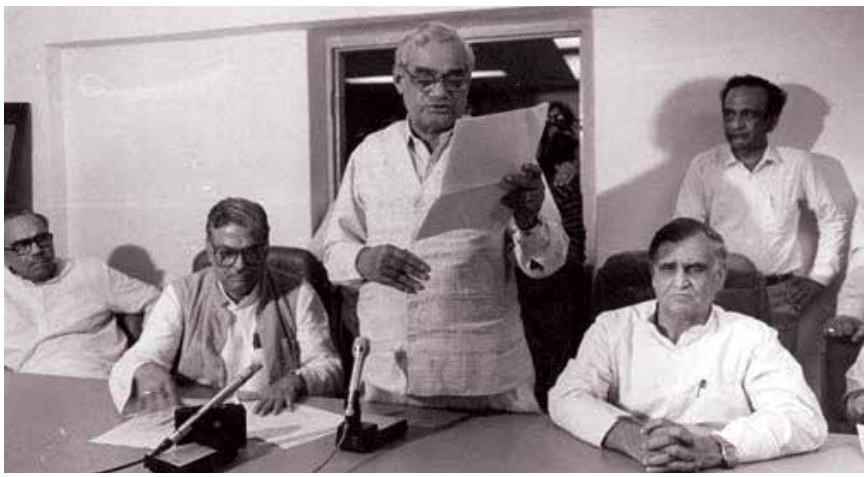

अपने जीवन को और सामाजिक जीवन को भी सच से जोड़कर रखा था। वो आजादी के बाद के पहले ऐसे नेता थे जिन पर जीवन के अंतिम सांस तक किसी ने कोई आरोप लगाने की हिम्मत नहीं की। सदन में एक बार उन्हें विरोधियों ने कह दिया कि अटल जी सत्ता के लोभी हैं, उस पर अटल जी ने संसद में कहा कि ''लोभ से उपजी सत्ता को मैं चिमटी से भी छूना पसंद नहीं करूंगा''।

सन 1975 में जब भारत में इंदिरा जी ने देश में आपातकाल लगाई, तब भी उन्होंने जेल की सलाखों को स्वीकार किया। पर इंदिरा जी के सामने झुके नहीं। जेल में भी उन्होंने साहित्य को जन्म दिया। साहित्य लिखा। जनता पार्टी जब बनी तो उन पर और तत्कालीन जनसंघ पर दोहरी सदस्यता का आरोप लगा तो उन्होंने कहा कि, ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में कोई सदस्य नहीं होता, वह हमारी मातृ संस्था है, हमने वहां देशभक्ति का पाठ पढ़ा है। इसीलिये दोहरी सदस्यता का सवाल ही नहीं उठता। हम जनता पार्टी छोड़ सकते हैं, पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नहीं छोड़ सकते।'' विचारधारा के प्रति समर्पण का ऐसा अनुपम उदाहरण बहुत ही कम देखने को मिलता है। वे शिक्षक पुत्र थे। संस्कार उन्हे उनके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी और माता कृष्णा देवी से मिले थे।

देश के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू जी ने चीन युद्ध के बाद संसद में अटल जी के दिये भाषण को सराहा था। उनके इस भाषण को पूरे देश ने भी सराहा था। भारत पाकिस्तान से जब–जब युद्ध हुआ उन्होंने तत्कालीन सत्ता को नीचे दिखाने के बजाये सत्ता के साथ भारत पुत्र होने का प्रमाण दिया। इनकी कार्य शैली के कायल थे स्वर्गीय प्रधानमंत्री नरसिंह राव। जिनेवा शिष्टमंडल में भारत के प्रतिपक्ष नेता के नाते जब भारतीय शिष्टमंडल को लेकर पहुंचे थे तो विश्व आश्चर्यचकित था। इसका मूल कारण था कि अटल जी कि मातृभक्ति और राष्ट्रभक्ति पर किसी को अविश्वास नहीं था। विश्व के यदि दस राजनीतिक स्टेट्समेन का नाम लिया जाता है, तो उनमें से एक नाम है अटल बिहारी वाजपेयी जी का।

रामजन्म भूमि के आंदोलन में जब ढांचा गिरा तो वे व्यथित हुये, पर संसद में उन्होने कहा कि, ''मैं ढांचे गिराने का पक्षधर नहीं हूं, लेकिन प्रधानमंत्री नरसिंह राव जी आप देश को यह तो बताइये कि यह परिस्थिति पैदा क्यों हुई। कारसेवकों का धैर्य क्यों टूटा? क्या इस परिस्थिति के निर्माण में सरकार की कोई भूमिका नहीं रही? मैं ढांचा गिराने के पक्ष में नहीं रहा। पर इस बात से सरकार कैसे बच सकती है कि आखिर ऐसी परिस्थिति निर्मित क्यों हुई?"

अटल जी बालकों से लेकर कांपते हाथों वाले वृद्ध के मन में भी अपना स्थान सदा बनाते रहे। अटल जी से हम सभी की अनेक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं और उनमें हर स्मृतियां प्रेरणादायी रहेंगी।

'' ऐ मातृभूमि के मातृभक्त,
पाकर तुमको हम धन्य हुए।
ले पुनः जन्म तू एक बार,
शत नमन तुझे है बार-बार।।''
अटल जी,
तूने था जो दीप जलाया,
उसे न बुझने देंगे हम।
उस बाती की पुंज प्रकाश से,
जगमग जग कर देंगे हम।।

अटल जी एक युगद्रष्टा थे। वे दीवार पर लिखे भविष्य की भी अनुभूति कर लेते थे। इसका एक सटीक उदाहरण है कि वे 6 अप्रैल 1980 को मुंबई स्थित माहिम के मैदान में भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक और अध्यक्ष होने के नाते जो अध्यक्षीय भाषण दिया था उसमें उन्होंने कहा था,''अन्धेरा छटेगा सूरज निकलेगा, और कमल खिलेगा।"

आज अटल जी नहीं हैं, पर उनके बाद की पीढ़ियों–वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते अमित शाह अटल जी के उपरोक्त वाक्य को सार्थक करते हुये भारत के हर राज्य में कमल खिलाने का काम कर रहे हैं। अटल जी काया से हमें छोड़ गये, पर उनकी छाया से हमारा वैचारिक अनुष्ठान तब तक चलता रहेगा, जब तक समाज के अंतिम व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान नहीं होगी। ■

(लेखक राज्यसभा सांसद एवं भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं)

देश आज आत्मविश्वास से भरा हुआ है: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 72वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर लालकिले की प्राचीर से देश को संबोधित किया

भाषण की मुख्य बातें

आज देश आत्मविश्वास से भरा हुआ है। सपनों के संकल्प के साथ परिश्रम की पराकाष्ठा से देश नई ऊंचाईयों को पार कर रहा है।

❖ दलित हो, पीड़ित हो, शोषित हो, वंचित हो, महिलाएं हो उनके हकों की रक्षा करने के लिए हमारी संसद ने संवेदनशीलता और सजगता के साथ सामाजिक न्याय को और अधिक मजबूत बनाया।

❖ ओबीसी आयोग को सालों से संवैधानिक दर्जा देने की मांग उठ रही थी। इस बार संसद ने इसे संवैधानिक दर्जा दे कर पिछड़ों और अति पिछड़ों के हकों की रक्षा करने का प्रयास किया।

भारत विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था

❖ भारत ने विश्व की छठी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपना नाम दर्ज करा दिया है।

❖ एक आत्मनिर्भर हिन्दुस्तान हो, एक सामर्थ्यवान हिन्दुस्तान हो, एक विकास की निरंतर गति को बनाए रखने वाला, लगातार नई ऊंचाइयों को पार करने वाला हिन्दुस्तान हो, दुनिया में हिन्दुस्तान की साख हो, और इतना ही नहीं, हम चाहते हैं कि दुनिया में हिन्दुस्तान की दमक भी हो। हम वैसा हिन्दुस्तान बनाना चाहते हैं।

❖ 2014 में इस देश के सवा सौ करोड़ नागरिक सिर्फ सरकार बना कर रुके नहीं थे। वे देश बनाने के लिए जुटे थे, जुटे हैं और जुटे रहेंगे। मैं समझता हूं यही हमारे देश की ताकत है।

❖ पिछले 4 साल में जो काम हुए हैं, उन कामों का अगर लेखा-जोखा लें, तो आपको अचरज होगा कि देश की रफ्तार क्या है, गति क्या है, प्रगति कैसे आगे बढ़ रही है।

❖ शौचालय ही ले लें, अगर शौचालय बनाने में वर्ष 2013 की जो रफ्तार थी, उसी रफ्तार से चलते तो शायद कितने दशक बीत जाते शौचालयों का निर्माण शत-प्रतिशत पूरा करने में।

❖ वर्ष 2013 की रफ्तार के आधार पर गांव में बिजली पहुंचाने के लिए शायद एक-दो दशक और लग जाते।

❖ गरीबों को एलपीजी गैस कनेक्शन, गरीब मां को धुंआ-मुक्त बनाने वाला चूल्हा, यदि 2013 की रफ्तार से चले होते तो उस काम को पूरा करने में शायद 100 साल भी कम पड़ जाते।

❖ वर्ष 2013 की रफ्तार से अगर ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क लगाने का काम करते तो शायद पीढ़ियां निकल जाती। ये रफ्तार, ये गति, ये प्रगति, ये लक्ष्य इस प्राप्ति के लिए हम आगे बढ़ेंगे।

❖ चार साल में देश बदलाव महसूस कर रहा है। देश एक नई चेतना, नई उमंग, नए संकल्प, नई सिद्धि और नये पुरुषार्थ के साथ आगे बढ़ा रहा है। आज देश दोगुना हाईवे बना रहा है, चार गुना, गांवों में नए घर बना रहा है।

रिकॉर्ड अनाज का उत्पादन

❖ देश आज रिकॉर्ड अनाज का उत्पादन कर रहा है, तो देश आज रिकॉर्ड मोबाइल फोन का उत्पादन भी कर रहा है। देश में आज रिकॉर्ड ट्रैक्टरों की बिक्री हो रही है।

❖ देश में आज आज़ादी के बाद सबसे ज्यादा हवाई जहाज खरीदने का काम हो रहा है।

❖ देश आज नए IIM, नए IIT, नए AIIMS की स्थापना कर रहा है। देश आज छोटे-छोटे स्थानों पर नए कौशल विकास के मिशन को आगे बढ़ाकर नए-नए सेंटर खोल रहा है।

❖ हमारे टियर 2, टियर 3 सिटीज में स्टार्टअप की बाढ़ आई हुई है।

किसानों को लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य

❖ हिम्मत के साथ फैसला किया गया कि देश के किसानों को लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य दिया जाएगा।

❖ देश के छोटे-छोटे व्यापारियों की मदद से, उनके खुलेपन से, नएपन को स्वीकारने के उनके स्वभाव के कारण आज देश ने जीएसटी लागू कर दिया। व्यापारियों में एक नया विश्वास पैदा हुआ।

❖ बुलंद हौसले और देश के लिए कुछ करने के इरादे के कारण बेनामी संपत्ति का कानून लागू किया गया है।

❖ भारत के लिए कहा जा रहा है कि सोया

हुआ हाथी अब जग चुका है, चल पड़ा है, सोए हुए हाथी ने अपनी दौड़ शुरू कर दी है। दुनिया के अर्थवेत्ता कह रहे हैं अंतरराष्ट्रीय संस्थान कह रहे हैं, आने वाले तीन दशक तक, विश्व की अर्थव्यवस्था की ताकत को भारत गति देने वाला है।

❖ आज अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत की साख बढ़ी है, दुनिया के मंचों पर हमने अपनी आवाज़ को बुलंद किया है।

आखिरी गांव में बिजली पहुंची

❖ पूर्वोत्तर के आखिरी गांव में बिजली पहुंच गई है।

❖ एक समय था जब पूर्वोत्तर को लगता था कि दिल्ली बहुत दूर है। हमने चार साल के भीतर-भीतर दिल्ली को पूर्वोत्तर के दरवाज़े पर ला करके खड़ा कर दिया है।

❖ आज हमारे देश में 65 प्रतिशत जनसंख्या 35 साल की उम्र की है। हमारे देश के नौजवानों ने nature of job को पूरी तरह बदल दिया है। स्टार्टअप हो, BPO हो, e-commerce हो, मोबिलिटी का क्षेत्र हो ऐसे नये क्षेत्रों को आज मेरे देश का नौजवान अपने सीने में बांध करके नई ऊंचाइयों पर देश को ले जाने के लिए लगा हुआ है।

13 करोड़ लोगों को मुद्रा लोन

❖ 13 करोड़ लोगों को मुद्रा लोन बहुत बड़ी बात है। उसमें 4 करोड़ नौजवान हैं, जिन्होंने ज़िंदगी में पहली बार कहीं से लोन लिया है, और अपने पैरों पर खड़ें होकर स्वरोजगार पर आगे बढ़ रहे है। ये अपने आप में बदले हुए वातावरण का एक जीता जागता उदाहरण है।

❖ हिन्दुस्तान के तीन लाख गावों में COMMON SERVICE CENTRE देश के युवा चला रहे हैं और हर गांव को, हर नागरिक को, पलक झपकते ही विश्व के साथ जोड़ने के लिए सूचना तकनीक का भरपूर उपयोग कर रहे हैं।

❖ वैज्ञानिकों के आधार, कल्पना और सोच के परिणामस्वरूप, 'नाविक' को हम लॉन्च करने जा रहे हैं। इससे देश के मछुआरों को, देश के सामान्य नागरिकों को नाविक के द्वारा दिशा दर्शन का लाभ मिलेगा।

❖ हमारे देश ने संकल्प किया है कि 2022 तक हम अंतरिक्ष में मानव सहित गगनयान लेकर के चलेंगे, जब ये गगनयान अंतरिक्ष में जाएगा, हम मानव को अंतरिक्ष में पहुंचाने वाले विश्व के चौथे देश बन जाएंगे।

❖ आज हमारा पूरा ध्यान कृषि क्षेत्र में आधुनिकता लाने के लिए, बदलाव लाने के लिए चल रहा है। आजादी के 75वें साल में हमने, किसानों की आय दोगुनी करने का सपना देखा है।

❖ मछली उत्पादन के मामलों में हमारा देश दुनिया में सेकेंड हाईएस्ट हो गया है।

आज शहद का निर्यात दोगुना

❖ आज शहद का निर्यात दोगुना हो गया है।

❖ गन्ना किसानों को खुशी होगी कि हमारे एथेनाल का उत्पादन तीन गुना हो गया है।

❖ खादी की बिक्री पहले से दोगुनी हो गई है।

❖ देश का किसान अब सोलर फार्मिंग पर भी बल देने लगा है। खेती के सिवाय वो सोलर फार्मिंग से बिजली बेच कर भी कमाई कर सकता है।

50 करोड़ को स्वास्थ्य बीमा

❖ आयुष्मान भारत योजना के तहत, 10 करोड़ परिवारों को, यानी करीब-करीब 50 करोड़ नागरिक, हर परिवार को 5 लाख रुपया सालाना हेल्थ इंश्योरेंस देने की योजना है। ये हम इस देश को देने वाले हैं।

❖ 25 सितंबर, 2018 को प्रधानमंत्री जन आरोग्य अभियान लॉन्च कर दिया जाएगा और उसका परिणाम ये होने वाला है कि देश के गरीब व्यक्ति को अब बीमारी के संकट से जूझना नहीं पड़ेगा।

❖ देश में भी मध्यमवर्गीय परिवारों के लिये, नौजवानों के लिये आरोग्य के क्षेत्र में नए अवसर खुलेंगे। टियर 2, टियर 3 टियर में नए अस्पताल बनेंगे। बहुत बड़ी मात्रा में मेडिकल कर्मी लगेगा। बहुत बड़े रोजगार के अवसर भी पैदा होंगे।

❖ हमने पिछले चार साल में ग़रीब को सशक्त बनाने की दिशा में बल दिया है। अभी-अभी एक अंतरराष्ट्रीय संस्था ने एक बहुत अच्छी रिपोर्ट निकाली है। उन्होंने कहा है कि पिछले दो वर्ष में भारत में पांच करोड़ ग़रीब, ग़रीबी की रेखा से बाहर आ गए हैं।

❖ गरीब को सशक्त बनाने के लिये हमने अनेक योजनाएं बनाई हैं। योजनाएं तो बनती हैं, लेकिन बिचौलिये उसमें से मलाई खा लेते हैं। ग़रीब को हक मिलता नहीं है।

❖ सरकार लीकेज बंद करने में लगी है, इस सरकार ने इसको रोका है। भ्रष्टाचार, कालेधन, ये सारे कारोबार रोकने की दिशा में हमने कदम उठाया है। इसके परिणामस्वरूप करीब 90 हज़ार करोड़ रुपया सरकारी खज़ाने में आया है।

आयकरदाता पौने सात करोड़

❖ देश में 2013 तक, यानी पिछले 70 साल की हमारी गतिविधि का परिणाम था, कि देश में डायरेक्ट टैक्स देने वाले 4 करोड़ लोग थे, लेकिन आज यह संख्या करीब-करीब दो गुना हो करके पौने सात करोड़ हो गई है।

❖ 70 साल में हमारे देश में जितने इनडायरेक्ट टैक्स में उद्यमी जुड़े थे वो 70 साल में 70 लाख का आंकड़ा पहुंचा है, लेकिन सिर्फ GST आने के बाद पिछले एक वर्ष में यह 70 लाख का आंकड़ा एक करोड़ 16 लाख पर पहुंच गया।

❖ हम काला धन, भ्रष्टाचार को माफ नहीं करेंगे। कितनी ही आफतें क्यों न आएं, इस मार्ग को तो मैं छोड़ने वाला नहीं हूं। अब दिल्ली के गलियारों में दलाल नज़र नहीं आते हैं।

तीन तलाक: एक कुरीति

❖ तीन तलाक की कुरीति ने हमारे देश की मुस्लिम बेटियों की ज़िंदगी को तबाह करके रखा हुआ है। और जिनको तलाक नहीं मिला है वो भी इस दबाव में गुज़ारा कर रही है। संसद के मॉनसून सत्र में कानून लाकर के हमारी इन महिलाओं को कुरीतियों से मुक्ति दिलाने का बीड़ा उठाया गया था। लेकिन अभी भी कुछ लोग हैं जो इसे पारित नहीं होने देते।

हमें ठहराव मंज़ूर नहीं है, हमें रुकना मंज़ूर नहीं है और झुकना तो हमारे स्वभाव में नहीं है। ये देश न रुकेगा, न झुकेगा, ये देश न थकेगा, हमें नई ऊंचाइयों पर आगे चलना है, उत्तरोत्तर प्रगति करते चलना है। ■

नहीं रहे छत्तीसगढ़ के राज्यपाल बलराम दास टंडन

(जन्म 1927 – निधन 2018)

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बलराम दास टंडन का 14 अगस्त को निधन हो गया। उन्होंने रायपुर के आंबेडकर अस्पताल में अंतिम सांस ली। वे पिछले कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे। श्री टंडन का जन्म एक नवंबर 1927 को पंजाब के अमृतसर में हुआ था। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद वे निरन्तर सामाजिक और सार्वजनिक गतिविधियों में सक्रिय रहे।

अपने शुरुआती दिनों में वे पंजाब व चंडीगढ़ में न केवल गरीब व जरूरतमंद मरीजों के लिए मुफ्त डिस्पेंसरी चलाई, बल्कि भारत-पाक बंटवारे के समय लोगों के लंगर भी लगाया। श्री टंडन 1951 में जनसंघ से जुड़े और 1953 में अमृतसर में पार्षद बने। उसके बाद वह छह बार विधायक रहे। अमृतसर सेंट्रल विधान सभा क्षेत्र से 1957, 1962, 1967, 1969 और 1977 में विधायक बने। 1997 में वह राजपुरा से चुनाव जीते और तत्कालीन बादल सरकार में स्थानीय निकाय मंत्री बने। जस्टिस गुरनाम सिंह की पहली गैर कांग्रेसी सरकार में वह 1969-70 में उप-मुख्यमंत्री बने। 1977-79 और 1997-2002 में वह कैबिनेट मंत्री रहे। उन्होंने आपातकाल के खिलाफ आवाज उठाई थी और जेल में रहे। श्री टंडन ने 18 जुलाई 2014 को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल का पद संभाला। ■

बलरामजी दास टंडन ने पंजाब की प्रगति और शांति के लिए दशकों तक काम किया: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बलरामजी दास टंडन के निधन पर शोक व्यक्त किया। शोक संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा, 'मैं श्री टंडन के निधन से व्यथित हूं। हमने एक सम्मानित जन सेवक खो दिया है। समाज के लिए उनकी सेवाओं को हमेशा याद रखा जाएगा। दुःख की इस घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिजनों और शुभचिंतकों के साथ हैं। श्री बलरामजी दास टंडन ने पंजाब की प्रगति और शांति के लिए दशकों तक काम किया। उद्योग और श्रमिकों के कल्याण के लिए उनके लगाव तथा उनके प्रशासनिक अनुभवों ने राज्य का महत्व बढ़ाया। आपातकाल के विरोध का साहस दिखाने के लिए उनको हमेशा याद किया जाएगा।'

बलराम जी का पूरा जीवन जनसेवा को समर्पित रहा: अमित शाह

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बलरामजी दास टंडन के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। अपने शोक संदेश में श्री शाह ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं वर्तमान में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल श्री बलराम दास टंडन के निधन का दुःखद समाचार प्राप्त हुआ। बलराम जी का पूरा जीवन जनसेवा को समर्पित रहा, वे जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। वे पंजाब के उपमुख्यमंत्री व छः बार विधानसभा सदस्य भी रहे, पंजाब में संगठन के विस्तार में भी उनका अहम योगदान रहा।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि बहुआयामी प्रतिभा के धनी श्री टंडन की जीवन-यात्रा काफी प्रभावशाली रही है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक भी रह चुके हैं। 1969-70 के दौरान वे अकाली दल-जनसंघ सरकार में पंजाब के उप-मुख्यमंत्री थे। उन्होंने 1977-79 में और 1997-2002 में प्रकाश सिंह बादल के मुख्यमंत्रित्व काल में कैबिनेट मंत्री के रूप में भी कार्य किया। देश में लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्षरत श्री टंडन जी को आपातकाल के दौरान 1975 से 1977 तक जेल की यातना भी सहनी पड़ी थी।

श्री शाह ने कहा कि श्री बलराम दास टंडन अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले एक जुझारू नेता के रूप में सदैव याद किये जायेंगे। वे लगातार सामाजिक और सार्वजनिक गतिविधियों में सक्रियता से हिस्सा लेते रहे। समाज सेवा और जनकल्याण कार्य करने की वजह से श्री टंडन पंजाब की जनता के बीच काफी लोकप्रिय थे। राष्ट्र व संगठन को निःस्वार्थ भाव से अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले बलराम जी का निधन भाजपा के लिए एक अपूर्णीय क्षति है।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह ने कहा कि दुःख की इस घड़ी में भारतीय जनता पार्टी के करोड़ों कार्यकर्ताओं की ओर से मैं ईश्वर से स्व. श्री टंडन के परिवार एवं उनके सहयोगियों को इस असीम कष्ट को सहन करने की शक्ति, साहस और धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना करते हुए अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

कमल संदेश के आजीवन सदस्य बने

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

आज ही लीजिए कमल संदेश की सदस्यता और दीजिए राष्ट्रीय विचार के संवर्धन में अपना योगदान!

सदस्यता प्रपत्र

नाम : .....

पूरा पता : .....

.....

..... पिन : .....

दूरभाष : ..... मोबाइल : (1)..... (2).....

ईमेल : .....

सदस्यता						
	एक वर्ष	₹350/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी/अंग्रेजी)	₹3000/-	☐
	तीन वर्ष	₹1000/-	☐	आजीवन सदस्यता (हिन्दी+अंग्रेजी)	₹5000/-	☐

(भुगतान विवरण)

चैक/ड्राफ्ट क्र. :..... दिनांक :..... बैंक : .....

नोट : डीडी / चैक '**कमल संदेश**' के नाम देय होगा।
मनी आर्डर और नकद पूरे विवरण के साथ स्वीकार किए जाएंगे।

(हस्ताक्षर)

कमल संदेश

अपना डीडी/चेक निम्न पते पर भेजें

डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003

फोन: 011-23381428 फैक्स: 011-23387887 ईमेल: kamalsandesh@yahoo.co.in

कमल संदेश: राष्ट्रीय विचार की प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका

भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अंतिम यात्रा की झलकियां

अटलजी की अंतिम यात्रा के लिए उमड़े जनसमुद्र के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह

अंत्येष्टि के समय स्मृति स्थल पर विशिष्टजन

श्री वाजपेयी के दाह संस्कार के समय विभिन्न दलों के नेताओं के साथ अटलजी के पारिवारिक सदस्यगण

अटलजी को पुष्पांजलि अर्पित करते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

नई दिल्ली में आयोजित 'सर्वदल प्रार्थना सभा' में अटलजी को श्रद्धांजलि देते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

प्रेषण तिथि: (i) 1-2 चालू माह (ii) 16-17 चालू माह
डाकघर: लोदी रोड एचओ., नई दिल्ली **"रजिस्टर्ड"**
36 पृष्ठ कवर सहित

आर.एन.आई. DELHIN/2006/16953
डी.एल. (एस)-17/3264/2018-20
Licence to Post without Prepayment
Licence No. U(S)-41/2018-20

अटलजी के परिवारजनों को सांत्वना देते प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा अटलजी को उनकी दत्तक पुत्री नमिता भट्टाचार्य द्वारा मुखाग्नि

'कमल संदेश परिवार' के लिए एक अविस्मरणीय क्षण

नई दिल्ली में डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास द्वारा प्रकाशित 'कमल संदेश विशेषांक' के विमोचन के अवसर पर पूर्व–प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी और अन्य वरिष्ठ भाजपा नेतागण

'कमल संदेश परिवार' प्रेरणास्रोत और अपने प्रिय नेता अटलजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।